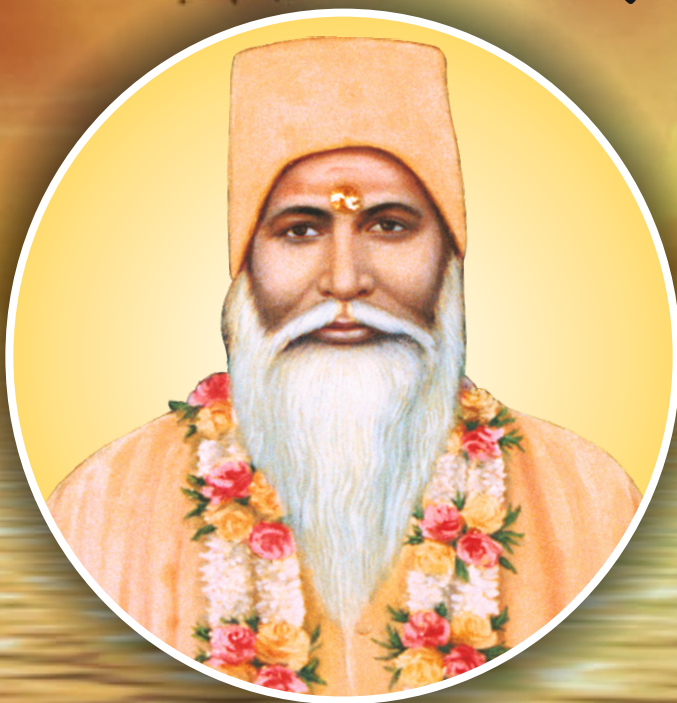


ॐ सत्नाम साक्षी

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के
संस्थापक - प्रवर्तक - युगपुरुष - कर्मयोगी
आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज का
संक्षिप्त जीवन परिचय एवं लेख
(भाग-4)



संकलन/संपादन : संत मौनूराम प्रेमप्रकाशी

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर • श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद

ॐ सत्नाम साक्षी
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के
संस्थापक - प्रवर्तक - युगपुरुष - कर्मयोगी
आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज का
संक्षिप्त जीवन परिचय एवं लेख
(भाग-4)



संकलन/संपादन : संत मौनूराम प्रेमप्रकाशी
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर ● श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद

॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥

श्री अमरापुर स्थान का महानतम पावन पर्व चैत्र मेला

मेलों और त्योहारों का जीवन में वही स्थान होता है जो मरुस्थलों में मरुउद्यानों का। ये मेले और त्योहार, ये उत्सव और पर्व जीवन की नीरसता और निर्जीवता को दूर कर उसमें आनन्द और उल्लास, उत्साह और स्फूर्ति भरते हैं और उसमें नवीनता और ताजगी के रंग बिखेर कर उसे सरस और इन्द्रधनुषी रखते हैं और उन्हें जीवन्त और जाग्रत रखने में महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।

मेले का शाब्दिक अर्थ है बहुत से लोगों का उद्देश्य सहित एक स्थान पर एकत्रित होना। पर याद रखिए कि वह भीड़ से बिल्कुल भिन्न, किसी लक्ष्य को लेकर लोगों का एक ही स्थान पर एकत्रित होना होता है। आध्यात्मिक और धार्मिक मेलों में सब लोगों का एक ही लक्ष्य, एक ही उद्देश्य, एक ही अभिलाषा, एक ही आकांक्षा होती है और वह है महापुरुषों के परम पावन जीवन से, विश्व की महान विभूतियों के सुन्दर चरित्र से प्रेरणा प्राप्त कर अपना आत्म कल्याण करना और अपने जीवन का नव-निर्माण करना। **मेले का अर्थ ही है, मेल-मिलाप, हृदय का हृदय से मिलन और उसके उच्चतम शिखर पर आत्मा का परमात्मा से मिलन !**

इस मिलन का आधार स्तम्भ है प्रेम, परम पावन प्रेम, निःस्वार्थ प्रेम। इसी उद्देश्य को लेकर श्री प्रेम प्रकाश पंथ के संस्थापक आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज ने 'चैत्र मेले' की स्थापना की थी। चैत्र मेले का शुभारम्भ चैत्र मास शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि को परम पूजनीय सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज ने स्वयं अपने पावन कर कमलों से किया था।

सिंध में यह मेला श्री अमरापुर दरबार टंडोआदम में प्रतिवर्ष श्रद्धा, उत्साह, आनन्द और उल्लास के साथ मनाया जाता था। इस मेले रूपी ब्रह्मयज्ञ में भाग लेने के लिए सिंध प्रदेश के कोने-कोने से प्रेमी सत्संगी, गुरुमुख, जिज्ञासु और मुमुक्षु आया करते थे। न केवल सिंध परन्तु पंजाब, राजस्थान, गुजरात एवं अन्य प्रदेशों से भी कई प्रेमी साधक आते थे। विदेशों से भी कई लोग टंडोआदम पहुँचकर सद्गुरु महाराज जी के श्रीचरणों में अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते थे। श्री प्रेम प्रकाश पंथ के संत महात्माओं के अलावा अन्य स्थानों से संत महात्मा, गायक, भजनीक, कवि-शायर, पंडित, विद्वान, दार्शनिक एवं विचारक इस मेले में सम्मिलित होते थे। सेवाधारी और स्वयंसेवक भी तन, मन, धन से मेले में सेवा कर अपना जीवन सफल बनाते थे।

सब तत्त्ववेत्ता संत महात्मा एक तथ्य को समान रूप से स्वीकार करते हैं कि जीवन की दो ही परम

आवश्यकताएँ हैं- भजन और भोजन! संत महात्माओं और हम संसारी जीवों के सोच विचार में बस एक ही अन्तर है और वह है- हम संसारी जीव भोजन को प्राथमिकता देते हैं जबकि सन्त महात्मा भजन को ही प्रधानता देते हैं। संत महात्मा यह मानकर चलते हैं कि जिस परमात्मा ने बच्चे के जन्म से पहले ही माता के स्तनों में दूध भरकर उसके आहार की व्यवस्था की है, जो विश्वम्भर है, जो चींटी को कण और हाथी को मण आहार देता है, उस परमपिता परमात्मा का भजन कर, उसके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट कर, उसका गुणगान कर, फिर बाँट कर प्रसाद रूप में भोजन पाना चाहिए। परन्तु ज्ञानी और दूरदर्शी महात्मा भी भोजन की महत्ता को समझते हैं, 'अन्न भगवान' की अनिवार्यता को जानते हैं। वे इस तथ्य से भलीभाँति परिचित हैं कि 'भूखे पेट भजन न होइ गोपाला'। सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज द्वारा शुभारम्भ किये गये चैत्र मेले के दिनों में भजन की अविरल धारा और भोजन में इतना सुंदर संतुलन और सामंजस्य होता है कि शरीर और आत्मा दोनों तृप्त और संतुष्ट हो जाते हैं। ध्यान रहे इस पवित्र मेले के अवसर पर कई परम उदारी सद्गृहस्थ आते हैं जो भण्डारे करवाते हैं। एक तो नाना प्रकार के षट्स भोजन तिस पर उन्हें पंक्तिबद्ध बैठकर ईश्वर प्रार्थना के पश्चात् प्रसाद रूप में पाना ऐसा आनन्द देता है, जो आनन्द कृत्रिम, अशुचि, छीना झपटी वाले पाँच सितारा होटलों में कदापि नहीं मिल सकता। उस प्रेम सरस, स्नेहसिक्त भोजन का स्वाद ही अद्वितीय है, अवर्णनीय है।

चैत्र मेला जो अब वर्तमान में बड़ी भव्यता के साथ मनाया जाता है। मेले के शुभारम्भ होने से काफी पहले ही सब प्रेमियों सत्संगियों, संतों महात्माओं को निमंत्रण-पत्र भेजे जाते हैं। इस वर्ष भी प्रेम प्रकाशियों का महाकुम्भ सदृश ६६ वाँ चैत्र मेला १० अप्रैल से १४ अप्रैल २०१७ तक श्री अमरापुर स्थान, जयपुर में बड़े धाम धूम से मनाया जायेगा। निमंत्रण-पत्र के शीर्ष में सद्गुरु महाराज जी के वचनामृत उद्धृत हैं-

कलियुग में प्रधान है, सेवा पुनि सत्संग ।

कहे टेऊँ जिसके किये, होवे भव दुःख भंग ॥

मेले में सम्मिलित होने के लिए निमंत्रण कितना न मधुर एवं मांगलिक है-

देखो प्रेमी आयके, अमरापुर स्थान ।

संत समागम पायके, अपना करो कल्याण ॥

सत्संग की महिमा बताते हुए भगवान श्रीकृष्णचन्द्र ने श्रीमद्भगद्गीता में स्वयं कहा है-

नाहम वसामि वैकुंठे, योगीनां हृदय न च । मद्भक्ता यत्र गायन्ति, तत्र तिष्ठामि नारद ॥

इस चैत्र मेले के परम पावन पर्व पर संत समागम का एक ऐसा दिव्य दृश्य उपस्थित होता है, ऐसी ज्ञान-गंगा प्रवाहित होती है जिसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है। ज्ञान-गंगा से भी बढ़कर प्रेम का ऐसा प्रवाह बहता है, स्नेह की ऐसी सरिता उमड़ पड़ती है, जिसमें ज्ञान ध्यान सब बह जाते हैं, और दिव्य

आनन्द की अनुभूति होती है। मेले के अवसर पर भाईचारे, सेवा, त्याग और सत्संग का अलौकिक दृश्य दृष्टिगोचर होता है।

चैत्र मेले का शुभारम्भ पूजा-अर्चना, हवन-यज्ञ, श्री प्रेम प्रकाश पंथ के ध्वजारोहण, सद्गुरु महाराज जी की आरती, वन्दन व पवित्र ग्रन्थों श्रीमद्भगवद्गीता एवं श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठारम्भ से होता है। पाँचों दिन नित्य प्रति सत्संग एवं अखण्ड भण्डारा चलता है। जिसमें सभी श्रद्धालु प्रसाद ग्रहण कर अपने जीवन को सार्थक बनाते हैं।

लगभग ४ बजे एक भव्यतम विशाल शोभा-यात्रा आरम्भ होती है। इस शोभा-यात्रा में सद्गुरु महाराज की आदमकद भव्य मूर्तियाँ रखी जाती हैं। मेले में नाना प्रकार की सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक झाँकियाँ प्रस्तुत की जाती हैं। भिन्न-भिन्न भजन मण्डलियाँ गाती बजाती नृत्य करती हुई-जिसमें सिंधी लोकनृत्य 'छेज' प्रधान होती है, दिखाई पड़ती हैं। शोभा-यात्रा श्री अमरापुर दरबार से आरम्भ होकर शहर के मुख्य मार्गों से गुजरती हुई वापस श्री अमरापुर दरबार पर शाम ७ बजे के पश्चात् पहुँचती है। शोभा-यात्रा का हार्दिक स्वागत करने के लिए विभिन्न स्थानों पर 'तोरण द्वार' बनाये जाते हैं। कई प्रेमी और भक्त सद्गुरु महाराज के विभिन्न मनमोहक स्वरूपों को एवं वर्तमान पीठाधीश्वर एवं श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के संतों को नमन कर उनका आशीर्वाद लेते हैं। शहर में जगह-जगह ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर सद्गुरु महाराज जी के भजन प्रसारित होते रहते हैं, विभिन्न प्रकार के खाद्य व सुमधुर पेय पदार्थों को प्रसाद रूप में निरंतर वितरित किया जाता है। भजन मण्डलियों में महिलाओं, माताओं, बहिनों में भी विशेष उत्साह और हर्षोल्लास दिखाई देता है। जगह-जगह शोभा-यात्रा पर पुष्प वर्षा की जाती है या गुलाब जल की बौछार की जाती है। कई बार हेलीकॉप्टर द्वारा भी पुष्प वर्षा के नज़ारे देखने को मिलते हैं।

भजन मण्डलियों में अलौकिक मौज-मस्ती का आलम रहता है। बीच-बीच में श्री गुरु महाराज के जयघोष से आकाश गूँजता रहता है। कई सेवाधारी ऐसे अलौकिक दृश्यों को कैमरा में उतारकर भविष्य में प्रेमप्रकाशी सत्संगियों को सत्प्रेरणा प्रदान करते हैं। आधुनिक युग में तो इंटरनेट के माध्यम से लाईव तस्वीरें-वीडियो के प्रसारण से देश-दुनिया के प्रेमी जो इस मेले में किसी कारण से सम्मिलित नहीं हो पाते हैं, कार्य स्थल पर ही मेले का आनन्द लेते हैं।

मेले का यह समय सद्गुरु महाराज ईश्वर को समर्पित होने के कारण चिन्तारहित और चिन्तन से परिपूर्ण होता है। इस मेले के पश्चात् प्रेमी आत्म-चिन्तन कर अपने जीवन को सफल और सार्थक बनाने का सुन्दर सद्प्रयास करते हैं। चैत्र मेले में प्रेमियों की अभिलाषित शुभ-इच्छाएँ भी आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज की कृपा से पूरी होती हैं।

॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥

प्रेम प्रकाश पंथ के संस्थापक

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज

यह संसार नश्वर है. पुरोदृश्यमान वस्तुओं में चेतन-अचेतन सब नाशवान है. यह जगत भगवान् की विचित्र लीलाओं का एक रंगमंच है, हम सामान्य जन यहाँ अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं और अभिनय समाप्त होने पर अदृश्य हो जाते हैं. किन्तु इसी बहुविध विविधताओं और द्वन्द्वों से यआप्लावित निःसार संसार की सारता और परमोपयोगिता को सिद्ध करने के लिये समय-समय पर महाविभूतियों का अवतरण और आविर्भाव होता है. वे अपने जीवन से, कर्म से, व्यवहार से और ज्ञान से सांसारिक लोगों की क्रिया एवं प्रकृति की प्रत्येक वस्तु को प्रभावित करते हैं. ऐसी ही एक महनीय, माननीय शिष्ट-विशिष्ट- वरिष्ठ विभूति का आषाढ़ शुक्ल षष्ठी शनिवार सम्वत् १९४४ (६ जुलाई १८८७) को अवतार हुआ. विलक्षण लक्षणों से सम्पन्न शैशव काल से ही अलौकिक विद्याविज्ञ एवं असाधारण क्रियावान् इस महापुरुष का लोकोद्धार बाल्यावस्था में ही प्रारम्भ हो गया था. लोकोत्तर गुण गरिमा से गरिष्ठ महात्माओं का आयु से कोई सम्बन्ध नहीं होता है !

भारतवर्ष का यह परम सौभाग्य है कि यहाँ परम पिता परमात्मा की अनुकम्पा से परम सिद्ध संतों और ईश्वर के अंशभूत अवतारों का प्रादुर्भाव होता है. आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी इसी संत परम्परा की परम कल्याणकारिणी पंक्ति की प्रतिष्ठित प्रतिभा हैं. भारत के इतिहास का भक्तिकालीन युग स्वर्णाक्षरों से लिखने योग्य है ! इस युग के कबीर, रहीम, रैदास, रसखान, मीरा, केशवदास, गुरुनानक आदि अनेक दैदीप्यमान नक्षत्र थे, जो अपनी भक्ति से उस ईश्वरीय शक्ति की अभिव्यक्ति सरस और सरल काव्यों, दोहों और पद्यों के माध्यम से कर सके थे. बीसवीं शताब्दी में भक्ति के विशाल व्योम में संत श्री स्वामी टेऊरामजी महाराज जैसे तेज पुंज मण्डित नक्षत्र का उदय हुआ और उन्होंने सत्संग की पावन मन्दाकिनी से लौकिक दुःखों से पीड़ित जनों के संताप नाश का परमोपकारी कार्य शुभारम्भ किया. सांसारिक लोग अज्ञान से

ग्रस्त होने के कारण अपने जीवन के परम लक्ष्य को भूल जाते हैं और नाशवान् वस्तुओं की प्राप्ति और सुरक्षा में ही अपनी अमूल्य शक्ति को समाप्त कर जन्म-मरण के चक्र में बंधे रहते हैं ! महात्मा और संत सत्य के प्रतीक हैं, वे अन्तिम सत्य की प्रतिमूर्ति हैं. संसारी लोगों की इस अवस्था और दयनीय दशा को देखकर उनकी कारुणिक भावना, हम लोगों की पीड़ा को दूर करने के उपाय बतलाती है ।

सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज ने इसी लक्ष्य की सिद्धि के लिये एक संत मण्डल की स्थापना की, जिसका नाम 'प्रेम प्रकाश मण्डल' रखा. यह सन्त मण्डल सत्य का उपदेश देता हुआ मनुष्य को उसके जीवन के वास्तविक उद्देश्य से परिचित कराता था. हम साधारण जन विस्मृति के अधीन हैं. विस्मरण हमारा स्वभाव है. यही सोचकर साधु, संत और महापुरुष हमें समय-समय पर दिव्य उपदेशों से भवरोग मुक्त करते हैं. सन्तों की प्रवृत्ति कोमल होती है ! अतः हमारे द्वारा बार-बार अक्षम्य त्रुटियाँ हो जाने पर भी, वे पुनः सत्य के मार्ग का उपदेश करते हैं. सर्वत्र सत्य का प्रचार करते हुए स्वामीजी ने सिन्धु प्रान्त के नवाबशाह जिले के टण्डाआदम शहर के दक्षिण में एक पावन तपोमय वन में, 'श्री अमरापुर स्थान' की स्थापना की. इस आश्रम में २०-२५ पर्ण कुटियाओं व सत्संग स्थल का निर्माण किया. स्वामीजी ने 'सत्नाम साक्षी' के परम पवित्र महामंत्र से प्रेमियों को दीक्षित किया तथा इस मंत्र को आत्मसात् करने का आदेश दिया

'बिनु सत्संग विवेक न होई' इस सिद्धांत और अटल नियम का स्मरण कर संतश्री ने सत्संग की महिमा को उजागर किया. सत्संग सांसारिक विषय वासना को दूर कर परम सत्य की ओर उन्मुख करता है. विवेक को जाग्रत करता है. सत्संग के प्रभाव से अज्ञान का नाश होता है और अज्ञान के नाश होने पर मोक्ष का मार्ग दिखाई देने लगता है. वेदान्त के सिद्धान्तानुसार यह संसार असत् है, यथा- 'रज्जु परित्यज्य सर्पं गृणाति वैभ्रमात्। तद्वत् सत्यं विज्ञाय जगत् पश्यति मून्धी॥' जैसे रस्सी में सर्प का भान और शूक्ति में रजत (चांदी) है. इस परम सत्य का ज्ञान ही सत्संग का उद्देश्य है. सद्गुरु स्वामी टेऊरामजी महाराज ने इसी सत्य का उपदेश इस प्रकार किया है-

सुन्दर देह को देख न फूलो, इक दिन ये जर जायेगी।

माया का अभिमान तजो, यह अन्त काम नहीं आयेगी।।

आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊरामजी महाराज का मौलिक चिन्तन और दर्शन उनके सत्संग प्रवचनों और रचनाओं में प्रकाशित हुआ है। 'श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ' एक विशालकाय आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थ है जिसका विषय विभाग व्यापक है। इसमें ब्रह्मदर्शनी, दोहावली, कवितावली और छन्दावली आदि है। श्रीरामचरितमानस के रचयिता भक्त शिरोमणि श्री तुलसीदासजी के समान ही सद्गुरु टेऊराम जी महाराज की कवितावली और छन्दावली भक्तिरस से ओत-प्रोत और उपदेश की अपूर्व कृतियाँ कही जा सकती हैं। सद्गुरु महाराज जी के स्वरचित भजन 'अमरापुर वाणी' में संकलित हैं जो सरस पदावली के कारण जन सामान्य को उपदिष्ट कर रहे हैं। भगवान् प्रेम के वशीभूत होकर प्राणी का उद्धार करते हैं- इसी प्रेम ने भगवान को कर्माबाई के घर बुलाया तो कभी शबरी के झूठे बेर खिलाये

कर्मा कुब्जा भीलनी, हाथी अरू हनुमान।

टेऊँ केवल प्रेम कर, पाया हरि भगवान।।

कबीरदासजी ने भी तो प्रेम को ही सब शास्त्रों का सीमान्त रेखा माना है-

पोथी पढ़ पढ़ जुग मुआ, पण्डित भया न कोई।

ढाई आखर प्रेम के, पढ़े सो पण्डित होई।।

सद्गुरु महाराज जी का व्यक्तित्व जितना महनीय है, उसी का प्रतिबिम्ब कृतित्व में भी परिलक्षित होता है। साधारण शब्दावली में गम्भीर दार्शनिक विषयों का सरलता पूर्वक विचार और विश्लेषण अपने आप में विशेष है। जीवन की क्षण भंगुरता का वर्णन करते हुए गुरु महाराज जी लिखते हैं-

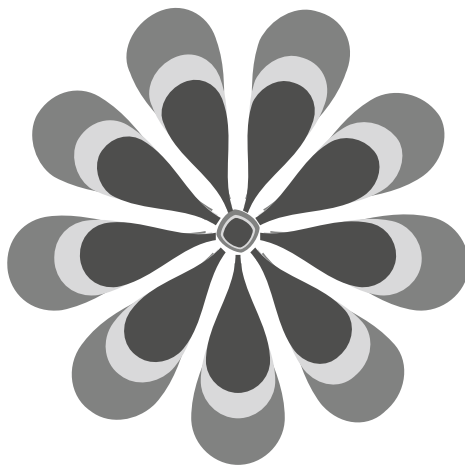
रैन गयी पुनि दिवस भया, दिवस गया भयी रात।

कह टेऊँ मन चेत ले आयु ऐसे जात।।

प्रत्येक क्षण मनुष्यों की आयु क्षीण होती जा रही है, मृत्यु निकट आ रही है। अतः सदैव ईश्वर का ध्यान करना चाहिये

सद्गुरु स्वामी श्री टेऊरामजी महाराज भक्तियुगीन संत समुदाय के प्रतिनिधि सन्त थे. इनका समाज के सुधार के प्रति व्यापक दृष्टिकोण और आध्यात्मिक ज्ञान की शिक्षा प्रदान करने की सहज प्रणाली जन जन को उपकृत कर रही है. उनका उपदेश है कि यदि सुख की अभिलाषा है तो हरि का जाप करो और यदि दुःख चाहते हो तो पाप करो

सद्गुरु महाराज जी बीसवीं शताब्दी के दिव्य अवतारी महापुरुष थे और सिद्ध संत परम्परा के प्रतिनिधि थे. परमात्मा के प्रत्यक्षीकरण की विद्या को पुनः जन साधारण के लिये सुलभ करने का उनका प्रयास सदैव स्मरणीय रहेगा. असत्य का अस्तित्व नहीं रहता और सत् का अभाव नहीं होता इसी सिद्धांत के अनुसार सद्गुरु महाराज के सत्य सिद्धांत सदैव संसार को मार्गदर्शन कराते रहेंगे और उनके द्वारा रचित सोलह शिक्षाएँ मार्गदर्शक के रूप में सदैव सहायक सिद्ध होंगी वर्तमान में उनका पावन तीर्थ स्थल श्री अमरापुर स्थान, जयपुर में स्थित है. इस स्थल पर भव्य मंदिर व समाधि स्थल भी बना हुआ है. आज हजारों श्रद्धालु प्रतिदिन इस पवित्र तीर्थधाम के दर्शन करते हैं. प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के इस महान विभूति आचार्यश्री को कोटिशः नमन और वन्दन है.



ॐ सत्नाम साक्षी

साईं टेऊराम बाबा का अमृत कुम्भ दर्शन

कुम्भ राशिगते जीवे यद्दिने मेषयो रविः।

हरिद्वारे कृतं स्नानं पुनरावृत्ति वर्जनम्॥

आज से लगभग ८७ वर्ष पूर्व, सन् १९२६ में सर्वप्रथम, एक समय फाल्गुन मास में स्वामी ग्वालानन्दजी और कुछ साधु-संतों ने 'सद्गुरु श्री साईं टेऊराम बाबा जी' से विनम्र निवेदन किया- हे प्रभु! दीनानाथ! इस वर्ष बारह वर्षीय पूर्ण अमृत महाकुम्भ हरिद्वार उतराखण्ड में चल रहा है. जिसकी महिमा सभी धर्मग्रंथ, शास्त्र व संत-महात्मा बताते हैं. हमारी भी हार्दिक इच्छा है कि आपके पावन सानिध्य व छत्रछाया में हरिद्वार में चल कर अमृत महाकुम्भ का दीदार-दर्शन करें. इस मेले में अनेकानेक संत-महात्मा, वैरागी, सन्यासी, उदारी, वीतरागी, हठयोगी, महन्त- मण्डलेश्वर व षडदर्शन साधु समाज आदि धर्मावलम्बी एकत्रित होते हैं. जिनका सत्संग-दर्शन, अध्यात्म ज्ञानचर्चा व माँ गंगा मैया का दर्शन-स्नान कर जीवन को सार्थक बनायें.

इस पर साईं टेऊराम बाबा ने कहा- श्री अमरापुर दरबार डिब्र पर प्रत्येक वर्ष लगने वाला चैत्र मेला भी है, उसे भी छोड़ना नहीं है. इस मेलेमें हजारों श्रद्धालु दूर-दूरसे आते हैं. आखिरकार सभी संत-महात्माओं से विचार विमर्श कर स्वामी सर्वानन्दजी, स्वामी शान्तिप्रकाश जी व कुछ संत-सेवाधारियों को दरबार पर चैत्र मेले का आयोजन करने हेतु छोड़कर हरिद्वार कुम्भ मेले में आ गये.

उस समय साईं टेऊराम बाबा के साथ स्वामी ग्वालानन्द, स्वामी गुरुमुखदास, स्वामी बसन्तराम, स्वामी उधवदास, संत मुरलीधर और कुछ प्रेमी भक्त मण्डली बनाकर हरिद्वार कुम्भ मेले में पहुँचे. सर्वप्रथम माँ गंगा मैया का दर्शन-स्नान, पूजा-पाठ आदि नित्यकर्म किया. तत्पश्चात् अनेकानेक संत-महन्त-महापुरुषों के पास जाकर ज्ञानचर्चा, आध्यात्मिक ज्ञानवार्ता, सत्संग-प्रवचन का श्रवण व प्रतिदिन माँ गंगा जी में स्नान आदि का लाभ प्राप्त किया.

सभी संत-सेवाधारी साईं के साथ संत- महात्माओं से मेल मिलाप, सत्संग व दर्शन कर अलौकिक आनन्द को प्राप्त कर रहे थे.

इन्हीं दिव्य दर्शनों के साथ-साथ अनेक तपस्वी साधुओं को धूणी रमाते, तप साधना में लीन देखा, कोई साधू १२ वर्षों से खड़े रहकर साधना में लीन था तो कोई तपस्वी काँटों की शैय्या पर तो कोई साधु चरण पादुका में कीलें लगाकर चल रहा था. कोई-कोई संत महापुरुष जीवन भर जमीन पर सोने का व्रत धारण किये देखे तो कई हठयोगी तपस्वियों ने अपनी भुजा को सजा दे रखी थी; उनका हाथ सदैव ऊपर ही रहता है. कहते हैं कि अमृत महाकुम्भ मेले में ऐसे-ऐसे विलक्षण दिव्य संत महापुरुषों के दर्शन होते हैं जो कभी भी गुफाओं-कन्दराओं से बाहर तक नहीं निकलते. केवल कुम्भ में प्रत्यक्ष रूप में दर्शन देते हैं. वे जीवन भर उन्हीं गुफाओं में भजन साधना में लीन रहते हैं. कुछ तो फल-फूल खाकर तो कुछ वायुभक्ष निर्जली संत होते हैं, जो अन्न-जल तक ग्रहण नहीं करते. ऐसे अनेक तप साधनारत संत-महात्माओं का दीदार-दर्शन कुम्भ मेले के अन्तर्गत ही हो पाता है.

ऐसे विलक्षण अद्भुत अविस्मरणीय सिद्ध तपस्वी महापुरुषों के दिव्य दर्शन सद्गुरु श्री साईं टेऊराम बाबा जी ने संत मण्डली के साथ प्रथम बार हरिद्वार महाकुम्भ मेले में लगभग दो महीने तक रहकर किये.

इसी प्रकार सद्गुरु श्री साईं टेऊराम जी महाराज ने जो-जो दृश्य हरिद्वार महाकुम्भ मेले में देखा, उनका वर्णन विस्तारपूर्वक कर सत्संग में बड़े ही भक्तिभाव के साथ सुनाया-

दिव्य रूप दर्शन गुरां के निजारे। देखा मेला कुम्भ का गंगा के किनारे।।

1. योगी वैरागी, त्यागी बेरागी। रागी अनुरागी, हरिहर पुकारे।।

2. सन्यासी, उदासी प्रेम प्रकाशी। अकाशी, बनवासी, नंगे थे हजारे।

3. ब्रह्मचारी पुजारी, आर्य अचारी। संसारी उदारी करत बहु भण्डारे।

4. भेष पन्थ बहुते, जड़ चेतन पूजते। सन्त महन्त वक्ते, अखण्ड ज्ञान उच्चारें।।

5. कहे टेऊं काहीं, ऐसा मेला नाहीं, देखे जो जन ताहीं, तिसे भाग भारे।।

भगवद् कृपा से माँ गंगा मैया के पावन तट पर कुम्भ मेला देखा, ऐसा अलौकिक दृश्य था. जहाँ पर योगीराज, महात्मा, वैरागी और त्यागी (जो कभी पैसे को हाथ से छूते तक नहीं), पुजारी, सन्यासी, उदासी और उत्तराखण्ड में रहने वाले महायोगी, तपस्वी, जो कभी भी शहर में नहीं आते, नागा साधु-संत उन सभी के दर्शन कुम्भ में हो रहे थे. बड़े-बड़े आह्वान, दशनाम, जूना आदि अनेक अखाड़ों में संत-महन्त-मण्डलेश्वरों का दर्शन! अनेक संत-महात्माओं द्वारा

खोले गये अन्नक्षेत्र, बड़े- बड़े विशाल भण्डारों का आयोजन, जिसमें भण्डारे का प्रसाद (सबके लिए था परिचित अपरिचित) खाकर साधु-संत- महात्मा व श्रद्धालुजन भगवद् भजन स्मरण कर रहे थे. सभी पंथ-सम्प्रदायों के संत-महात्मा व मण्डलेश्वर और कथावाचकों ने सत्संग शिविर लगा रखे थे. जहाँ भजन व भोजन निरन्तर चल रहा था. कहीं चतुर्वेदी यज्ञों का महाअनुष्ठान, तो कहीं पूजा-पाठ आदि के शुभ कार्य चल रहे थे. ऐसा अनूठा, अनोखा, अद्भुत दिव्य महाकुम्भ मेला हिन्दू सनातन धर्म में लगाया जाता है. वैसे तो अनेक मेले लगते हैं किन्तु संत-महात्माओं का दर्शन-सत्संग, माँ गंगा स्नान- दर्शन, पूजा-पाठ, यज्ञ-हवन, धर्म का प्रचार आदि सात्विक कर्मों से परिपूर्ण इस कुम्भ मेले की विशिष्ट पहचान थी.

अमृत प्राप्त करने का सुअवसर जिसके पान करने से मन स्वतः निर्मल पवित्र हो जाता है. जिनके पूर्व जन्म के भाग्य जाग्रत होते हैं, उसे ही ऐसे सात्विक आध्यात्मिक कुम्भ मेले के दिव्य दर्शन होते हैं.

सद्गुरु श्री साईं टेऊराम बाबा जी ने इसी प्रकार 'हरिद्वार अमृत महाकुम्भ' का सभी संत-सेवाधारियों को अपने 'श्रीमुख' से अमृतपान द्वारा दीदार-दर्शन कराया.

-प्रेमप्रकाशी संत मोनूराम

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अहमदाबाद



आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज की जीवन लीला सम्बन्धित दोहे

1. आशुतोष से कर रही, विनती कृष्णा मात। निज सम सुत मोहि दीजिये, करुणा करके तात।।
2. माता कृष्णा हृदय में, फूली नाहिं समाय। सन्त जनों की प्रेम से, सेवा रही कमाय।।
3. भगवत् कृपा धार के, दर्शन दीना आज। बाल रूप बन मात के, पूरण कीने काज।।
4. निर्गुण पूरण पारब्रह्म जो, सत् चित सुखधाम। कृष्णा के घर प्रकटिया, बालक टेऊराम।।
5. माता कृष्णा प्रातः उठ, चक्की रही चलाय। बालक को निज ज्ञान की, लोरी रही सुनाय।
6. खिल्लू को जब ले चली, प्रबल सिन्धु की धार। सद्गुरु टेऊराम ने तत्क्षण लिया उबार।।
7. भजन सार संसार में, जब उपजा मन ज्ञान। शहर छोड़ एकान्त में, करने लगे हरि ध्यान।।
8. जितनी विद्या जगत की, सो सब अविद्या रूप। तांकों तज इक ओम का, स्मरण करो अनूप।।
9. पीछे अपना काम कर, पहले कर उपकार। सबका घट भरवाय कर, तब लीनी जल धार।
10. भगवत की कृपा भई, सन्त पधारे धाम। भये प्रफुल्लित हृदय में, सद्गुरु टेऊराम।।
11. जेते सुख संसार के, तेते सेवा माहिं। भोजन पावें सन्त जन, आप जिमावें ताहिं।।
12. मजदूरी करके लिया, इकतारे का साज। भूल न किससे मांगिये, कैसा भी हो काज।।
13. सच्चा सौदा नाम का, झूठा सब व्यवहार। नाम जपें चलता रहे, जग का कारोबार।।
14. सद्गुरु के युग चरण की, सेवा कर निष्काम। स्वामी आसूराम से, मंत्र लिया सुख धाम।।
15. 'खण्डू' जल से घिर गया, विकल भये नर नार। वरुण देव से विनय कर, सद्गुरु लियो उबार।।
16. तज कर घर परिवार को, बैठे जा शमशान। हरि भक्ति में लीन हो, याद किया भगवान।।
17. निज कर कुटी बनाय ली, कीनी तपस्या घोर। भान नहीं कुछ समय का, सांझ भयी या भोर।।
18. माया आई मोह ने, धार मोहिनी रूप। जान लिया गुरुदेव ने, महिमा अमित अनूप।।
19. लक्ष्मी नारायण खड़े, धर अंग्रेजी भेष। किसने आग लगाई है, कहौ हमें दर्वेश।।
20. कूप नीर जब चुक गया, भक्तनि करी पुकार। सद्गुरु छीटा मार तब, कीनी जय जयकार।।
21. अब तो अमरापुर बनी, अद्भुत आलीशान। जांका दर्शन करत ही, आनन्द होय महान।।
22. मुस्लिम भक्तों ने किया, आदर सहित सलाम। गाया तब गुरुदेव ने, विरही एक कलाम।।
23. चरण पादुका चाहते, स्वामी आसूराम। सत्संग से उठ शीश पर, लाये टेऊराम।।
24. खतम हुआ राशन सभी, सेवक कहे पुकार। रेत, नीर से तुरन्त ही, भोजन किया तैयार।।

25. सूखा आम हरा हुआ, सुन सत्गुरु का ज्ञान। रे मन तेरा क्यों नहीं, दूर हुआ अज्ञान॥
26. खेती अगले साल भी, हो सकती है तात। सुमरन कर लो राम का, आयू बीती जात॥
27. कित सत्गुरु कित दीन मैं, छोले बेचनहार। सुन पुकार मण्डली बिना, आये गुरु गमटार॥
28. कण्डी ने कांटे तजे, गुरु का सुन उपदेश। मीठी वाणी बोलिये, सत्गुरु का संदेश॥
29. गर्मी में चलकर सभी, संत हुए बेहाल। बिनती सुन गुरुदेव ने, वर्षा की तत्काल॥
30. चोर पकड़ कर सामने, लाये सेवादार। कृपा दृष्टि गुरु की भई, बन गया चौकीदार॥
31. गुल सत्तार शरण पड़ा, खाट चढ़ा बीमार। सत्गुरु नव जीवन दिया, गुलशन नाम पुकार॥
32. बैठ हिमालय पर करें, सन्तों संग विचार। साची हरि की प्रीति है, झूठा सब संसार॥
33. इक बुढ़िया के द्वार पर, पड़यो देख मृत श्वान। छाड़यो जा दरियाह में, सब में लख भगवान॥
34. मैं निकस्यो अपने घर सों, इक द्वार खड़ी बुढ़िया महतारी।
जो मृत श्वान के काज हरीजन, सों विनती करके थकहारी।
मांगत दाम हरीजन जो वह, दे नहीं पाय गरीब विचारी।
मोंसो कही हम काढ़ लियो, हरिनाम महातम जान के भारी॥



‘ॐ सत्नाम साक्षी’

साईं टेऊराम लीला-दर्शन

जय जय हो तेरी बाबा टेऊराम, आये हैं हम दास तेरे।।

दास तेरे हम दास तेरे

१. धरती पर जब पाप बढ़े, आता है इक अवतारी।
मोहन ने गीता में सबको, बात कही थी प्यारी।
करने दुष्टों का संहार, आऊँगा मैं हर बार।
करना दुष्ट दलन ही मेरा तो है काम।।

आये हैं हम दास तेरे

२. खण्डू नगर में जन्म लिया इक, देख घड़ी शुभ बेला।
माता कृष्णा को दिखलाया, रूप अजब अलबेला।
मैया निरख निरख के हारे, लगते थे तुम इतने प्यारे।
आये गर्भ में कर मैया को प्रणाम।

आये हैं हम दास तेरे

३. शुभ षष्ठम् की शुक्ल असाढ़े, वार शनि था पावन।
देव रूप धन मनुष देह में, आते हैं हरि आँगन।
बालक का था तेज निराला, घर में फैल गया उजियाला।
घर घर बाँट रहे बधाई चेलाराम।

आये हैं हम दास तेरे

४. लौरी दे दे मात लुडावे, मधुर मधुर धुन गावै।
नामकरण संस्कार किया तुम टेऊराम कहाये।
आँगना गिरत उठत फिर चाले, मैया बालक को सम्भाले।
पिता बरस के जैसे एक घड़ी पल याम।।

आये हैं हम दास तेरे

५. करने पाठ पठन बालक को, शाला में भिजवाया।
पारंगत जो ब्रह्मज्ञान में, किसने उन्हें पढ़ाया।
गुरुजन का भी मन हर लिन्हा, जो शाला में सत्संग किन्हा।

गुरुजन बोले ज्ञानी बालक टेऊँराम॥

आये हैं हम दास तेरे

६. राम को भजना सत्संग करना, नित्य कर्म था उनका।
राम भरोसे हाट है उनकी, राम रमैया जिनका।
न हानी लाभ की चिन्ता घेरे, मन से राम राम जो फेरे।
ऐसा अद्भुत देखा भक्ति का परिणाम॥

आये हैं हम दास तेरे

॥ टेऊँराम- टेऊँराम, हमें दर्शन दो- प्रभु दर्शन दो॥

७. सिन्धु तट पर इक दिन आये ग्वाल बाल संग लाये।
आप लगाये ध्यान प्रभु का, बालक जल में नहाये।
जाकर गहरे जल में बालक, डूबा जब इक खिल्लू नामक।
खूब मचाते हैं सब बालक कोहराम॥

आये हैं हम दास तेरे

८. टेऊँराम ने जब देखा जा, पल में जल में कूदे।
सिन्धु के जल में दूजे पल, वस्त्र सहित जा डूबे।
बालक डर के शोर मचाये, दौड़े-दौड़े तट पे आये।
तेरी याद में बालक रोने लगे तमाम॥

आये हैं हम दास तेरे

९. जल से दूजे पल बालक को, लेकर संत पधारे।
जै जै टेऊँराम के नभ में, गूँज उठे जैकारे।
तेरी लीला है महान, जै जै टेऊँराम भगवान।
तू बेअन्त और बेअन्त तेरे काम॥

आये हैं हम दास तेरे

१०. बालक खिल्लू ने तब बाहर, आकर बात बताई।
जब जल में मैं डूब रहा था, अद्भुत दुनियां पाई।
मैंने देखा जल के अन्दर, आके देव वहाँ इक सुन्दर।
उसने बाँह पकड़ के लिन्हा मुझको थाम।

आये हैं हम दास तेरे

११. पहुँच गये दूजे पल स्वामी, देव देख हरषाया।
दोनों ने तब इक दूजे को, प्रेम से गले लगाया।

पल में हो गये अर्न्तध्यान, स्वामी जी को दे सम्मान।
मेरा हाथ पकड़ ले आये टेऊँराम॥

आये हैं हम दास तेरे

१२. सारे बालक कहने लगे वो, देव कौन था सुन्दर।
तीव्र कामना है मन में वो, कौन था जल के अन्दर।
टेऊँराम मन्द मुस्काये, उनको वरुण देव बतलाये।
सुनके नाम किया स्वामी जी को प्रणाम॥

आये हैं हम दास तेरे

॥ टेऊँराम- टेऊँराम, हमें दर्शन दो- प्रभु दर्शन दो॥

१३. इकतारे के एक ताप पे, ऐसी अलख जगाई।
प्रेम प्रकाशी पंथ बनाके, प्रेम की जोत जलाई।
मन से इर्षा द्वेष हटाया, सबको करना प्रेम सिखाया।
तुम हो दया प्रेम की मूरत टेऊँराम॥

आये हैं हम दास तेरे

१४. निराकार साकार तुम्हीं हो, तुम हो अर्न्तयामी।
परम पिता तुम जग के पालक, तुम हो सबके स्वामी।
दाता तेरे नाम की ज्योति, जैसे चमके सीप में मोती।
तेरा हर पल मेरे मन में हो विश्राम।

आये हैं हम दास तेरे

१५. राग जो सारंग तुमने छेड़ा, बादल घिर घिर आये।
पतझड़ दूजे ही पल देखो, सावन-सा लहराये।
सब पे तेरा है अधिकार, तेरी लीला अपरम्पार।
तेरे हाथ में सारी सृष्टि की लगाम॥

आये हैं हम दास तेरे

१६. मेले में गुरु आसूराम ने, जूता जब मँगवाया।
खुद ही लेकर चरण पादुका, पल में टेऊँ आया।
गुरु जी तुम पे थे बलिहार, तुम थे सेवा के अवतार।
तुम्हारी गुरु सेवा भक्ति को है प्रणाम॥

आये हैं हम दास तेरे

१७. अंजली में जल लेकर तुमने, भोजन पर जो मारा
तेरी दया से खत्म न होता, था भरपूर भण्डारा।
जितना बांटा बढ़ता जाये, तेरे खेल समझ न आये।
तेरी महिमा है अनन्त अभिराम।।

आये हैं हम दास तेरे

॥ टेऊराम- टेऊराम, हमें दर्शन दो- प्रभु दर्शन दो॥

१८. सच्चा सुमिरण है इक तेरा, बाकी जग ये झूठा।
भक्तों की मन बगिया का तू, इक महकता बूटा।
तेरे नाम का सुमिरण देवा, हर विपदा संकट हर लेवा।
हम तो तेरा सुमिरण करते आठों याम।।

आये हैं हम दास तेरे

थलु: जय हो जय हो तेरी बाबा टेऊराम,
आये हैं हम दास तेरे, दास तेरे हम दास तेरे॥

१. बाँट के खाना सब सुख पाना, तुमने बात सिखाई।
छुपकर खाना मिट्टी पाना, कहते मेरे साईं।
औरों को दिखलाकर खाए, कूड़ा करकट वो बन जाए।
जो है सूखा सूखा मिलके खाओ ताम।।

आये हैं हम दास तेरे

२. इक दुखियारी शरण तिहारी, आकर टेर लगाई।
एक अदद औलाद की खातिर, झोली आन फैलाई।
तेरी कृपा की थी माया, अंगना दो दो फूल खिलाया।
महिमा गाए पार्वती संग आवतराम।।

आये हैं हम दास तेरे

३. तुम करुणा के सागर हो तुम, भक्तन के हितकारी।
तेरी दया से सब भक्तों की, हरी रहे फूलवारी।
साईं तू सबका रखवाला, तेरे नाम की फेरे माला।
हम सब तेरा सुमिरण करते सुबहो शाम।।

आये हैं हम दास तेरे

४. गुरु आज्ञा से भण्डारी ने, जब भण्डार लुटाया।
सांझ ढले अन्न और चावल, ले इक वाहक तब आया।
सबने चमत्कार देखा था, हर इक बोरी पर लिखा था।
भेजने वाला टेऊँराम।।

आये हैं हम दास तेरे

५. मन विषयों से दूर रहें जब, सहज समाधी पाये।
जो बैठे सद्गुरु चरणों में, भव सागर तर जायें।
जो मन प्रभु भजन में लागे, उनके जन्मों के दुःख भागे।
सबसे कहते हैं ये बाबा टेऊँराम।।

आये हैं हम दास तेरे

६. सद्गुरु टेऊँराम ने ऐसा, मंत्र दिया हम सबको।
मन से जो जन जाप करे, भव सागर पार करेगा उनको।?
पंथ बनाके प्रेम प्रकाशी, मंत्र दिया है सत्नाम साक्षी।
जब तक धरती अम्बर होगा तेरा नाम।।

आये हैं हम दास तेरे

॥ टेऊँराम- टेऊँराम, हमें दर्शन दो- प्रभु दर्शन दो॥

७. सद्गुरु तेरी सोलह शिक्षा जिस जिसने भी मानी।
कट जाए चौरासी उसकी ऐसे कहते ज्ञानी।
जपते जो जन टेऊँराम, उनके पूर्ण होते काम।
इन शिक्षाओं से मिलता मन को आराम।।

आये हैं हम दास तेरे

८. तुमने जंगल में मंगल कर, प्रेम की ज्योति जला दी।
पत्ता पत्ता डाली डाली, गुलशन-सी महका दी।
मीठे कुँए की जलधारा से तुमने बदला नज़ारा।
उड़ती रेत को दिया तुमने ही विराम।।

आये हैं हम दास तेरे

९. बैर जो मन में लेकर आता, आते ही झुक जाता।
श्रद्धा से वो भेंट चढ़ाकर, मन वाँछित फल पाता।

आता जो भी गर्व बढ़ाकर, जाता तुझको शीष नवाकर।
मुख से गाता जाये साक्षी सत्नाम॥

आये हैं हम दास तेरे

१०. प्रेम भरे हाथों की टुकड़ी, अमृत जैसी लागे।
जिसको ये प्रसाद मिला उसकी हर विपदा भागे।
चटनी टुकड़ी के समान- जग का ना कोई पकवान।
ऐसी प्रेम भरी प्रसादी है सुखधाम॥

आये हैं हम दास तेरे

॥ टेऊराम- टेऊराम, हमें दर्शन दो- प्रभु दर्शन दो॥

११. द्वेष फैलाकर आग लगाकर, फूल गये अज्ञानी।
अपने अहम के कारण, उनको मुँह की पड़ी थी खानी।
आया ऊपर से फरमान, भूमि कर दो उनके नाम।
वे भी दास बने ये देख अंजाम॥

आये हैं हम दास तेरे

१२. मांझी को जब समझ न आई, हाथ जोड़कर बोला।
तीव्र वेग जल रात अंधेरी, नैया ले हिचकोला।
कुछ भी समझ न उसको आये, मनवा देख-देख डर जाये।
मेरी बुद्धि नहीं करती कुछ काम॥

आये हैं हम दास तेरे

१३. हाथ उठाकर सद्गुरु बोले, नाव को ले चल भाई।
जो सद्गुरु की राह चले, वो नैया डूब न पाई।
जो सद्गुरु का ले सहारा, उसको मिल जाता किनारा।
सद्गुरु पार करेंगे पल्ला ले तू थाम॥

आये हैं हम दास तेरे

१४. अंधियारे में भटक रहा हूँ, कर दो तुम उजियारा।
धीर बंधा दो मेरे मन को, मैं तो मन से हारा।
तू ही कारक तू ही कर्ता, तू ही सबके दुखड़े हरता।
सारे जग में गूँजे इक तेरा ही नाम॥

आये हैं हम दास तेरे

१५. दुःख भंजन सुखदाई तेरा, नाम बड़ा है पावन।

है पुनीत अमरापुर तेरा, धाम बड़ा मन पावन।
जब जब मन से तुझे पुकारा, आकर तुमने दिया सहारा।
करते भक्तों के हो सारे पूरण काम॥

आये हैं हम दास तेरे

१६. दर दर भटका आखिर तेरे, दर पर चलकर आया।
भटक रहा था मैं तृष्णा में, दर दर ठोकर खाया।
मेरा जीवन है संग्राम, मुझको तारो हे सुखधाम।
मेरे सर पे कर दो कृपा टेऊँराम॥

आये हैं हम दास तेरे

॥ टेऊँराम- टेऊँराम, हमें दर्शन दो- प्रभु दर्शन दो॥

१७. शनिवार की महिमा न्यारी, जग में आप पधारे।
तेरी तपस्या के बल से हुए, शनि के वारे न्यारे।
जो भी शनिवार को आवे, गुरु चरणों में शीश झुकावे।
उसकी मंशा पूरी करते टेऊँराम॥

आये हैं हम दास तेरे

१८. अमरापुर के धाम की महिमा देवों ने भी मानी।
इस तीर्थ को वन्दन करते, सुरनर मुनिवर ज्ञानी।
जग में दूजा धाम न ऐसा, जैसा अमरापुर है वैसा।
जग में दूर दूर तक फैला इसका नाम॥

आये हैं हम दास तेरे

॥ टेऊँराम- टेऊँराम, हमें दर्शन दो- प्रभु दर्शन दो॥



॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥

संक्षिप्त वर्णन- सनातन धर्म एवं सिंधु-संस्कृति का केन्द्र

पुण्यमयी तपोभूमि श्री अमरापुर दरबार

भारत का पेरिस गुलाबी नगर जयपुर जिसे लघु काशी भी कहा जाता है, एक ओर जहाँ प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का, अद्भुत स्थापत्य कला एवं नियोजित नगर योजना के लिए विश्वविख्यात है, वहीं दूसरी ओर, अनोखे आध्यात्मिक वातावरण, अद्वितीय धार्मिक सहिष्णुता, विलक्षण सामाजिक सामंजस्य के लिए भी जगत प्रख्यात है। शायद यही कारण है कि गुलाबी नगर के डगर-डगर पर, प्रत्येक गली और कूचे में, प्रत्येक पथ पर कोई-न-कोई पूजा स्थल, कोई-न-कोई आध्यात्मिक आस्था का केन्द्र बना हुआ है। जयपुर महानगर की शान में चार चाँद लगाता एक महान् मन्दिर, आध्यात्मिक आस्था का केन्द्र एवं सभ्यता एवं संस्कृति की धरोहर को सुरक्षित रखने में अग्रणी स्थल है- **‘श्री अमरापुर स्थान !’**

यह आश्रम, एम. आई. रोड पर, रेल्वे स्टेशन एवं मुख्य बस अड्डे के काफी निकट स्थित है। इस विशाल आश्रम का भव्य प्रवेशद्वार अपनी अनोखी प्राचीन स्थापत्य कला एवं सुन्दर सजावट के कारण राह चलने वालों को बरबस अपनी ओर आकर्षित करता है। मुख्य प्रवेश द्वार पर **‘श्री अमरापुर स्थान’** बड़े बड़े सुन्दर एवं आकर्षक ढंग से लिखा हुआ है। यह विशाल आश्रम (श्री प्रेम प्रकाश मण्डल, जिसे श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य १००८ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने स्थापित किया था, जिसकी शाखाएँ देश-दुनिया के १५० से अधिक स्थानों पर हैं।) का मुख्यालय है।

‘श्री अमरापुर स्थान, जयपुर’ के निर्माण की एक अलग ही पृष्ठभूमि, एक अलग ही इतिहास, एक अलग ही गौरव गाथा है। भारत विभाजन के भी पहले, आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, अपने परम शिष्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के साथ अखण्ड भारत के विभिन्न तीर्थों की यात्रा कर मथुरा से जयपुर होते हुए, वापस **‘टंडोआदम’** सिंध (वर्तमान पाकिस्तान) जाना चाहते थे। एक या दो दिन के लिए इस गुलाबी नगरी में विश्राम किया और यहाँ के मुख्य मन्दिरों एवं दर्शनीय स्थलों को देखकर बड़े ही आनन्द मग्न हो गए।

स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के साथ भ्रमण करते हुए आचार्य प्रवर ठीक इसी स्थान पर पहुँचे। (जहाँ वर्तमान में श्री अमरापुर स्थान बना हुआ है।) आध्यात्मिक सौरभ की गंध पाकर, बड़े ही प्रफुल्लित हुए और अपने परम शिष्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से बोले- ‘क्यों, भई सर्वानन्द, यह स्थल प्रेम प्रकाश आश्रम के निर्माण के लिए कैसा रहेगा।’ परम गुरुभक्त स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने भी उतने ही उत्साह, स्फूर्ति एवं आनन्द के साथ उत्तर दिया था- ‘गुरुदेव, अत्यन्त उत्तम रहेगा।’

त्रिकालदर्शी आचार्य-प्रवर सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज की भविष्यमयी अमृतवाणी सत्य साबित हुई और स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने संत मण्डल के साथ मिलकर आचार्यश्री के स्वप्न को साकार किया। जिसके फलस्वरूप आज यहाँ श्री अमरापुर स्थान स्थित है। आचार्य-प्रवर सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज ईश-अवतार थे। श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है- 'जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की अभिवृद्धि होती है, तब-तब मैं सन्त पुरुषों की रक्षा के लिए और असंतों के विनाश के लिए स्वयं अवतार धारण करता हूँ।' उस समय सिंधु प्रदेश पर एक अन्य सभ्यता एवं संस्कृति का प्रभाव उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा था, लोग अपना सनातन धर्म छोड़कर, प्राचीन रीति-रिवाजों को त्याग कर, आध्यात्मिक मार्ग से भटक रहे थे, ऐसे ही समय में अवतार धारण किया था आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज ने! किस प्रकार उन्होंने पूरे सिंधु प्रदेश में सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार किया, किस प्रकार भारतवर्ष के विभिन्न भागों में 'वेदांत' की अखण्ड ज्योति जगाई, किस प्रकार उन्होंने जन-जन के हृदय में प्रेम का प्रकाश फैलाया, उसका सारा इतिहास उनकी पावन जीवन कथा में लिखा हुआ है।

जिस प्रेम प्रकाश पंथ का पौधा आचार्य जी ने लगाया था, वह आज एक विशाल वटवृक्ष की भाँति देश-दुनिया के कोने-कोने में फैला हुआ है। उन्होंने अपने अनुयायी भक्तों को मंत्र दिया था 'सत्नाम साक्षी' इसी मंत्र से सब सत्संगी, प्रेम प्रकाशी जिज्ञासु एक-दूसरे को प्रणाम कर सम्बोधित करते हैं, अभिवादन करते हैं और एक-दूसरे का स्वागत-सत्कार करते हैं। प्रेम प्रकाश पंथ के आराध्य इष्ट हैं- 'लक्ष्मी-नारायण' जिनका एक अत्यन्त मनभावनी आकर्षक श्रीविग्रह श्रीमंदिर में प्रतिष्ठित है।

आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज एक महान् तत्त्ववेत्ता संत थे। उनकी अमृतमयी वाणी श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ में संकलित है। उन्होंने यम-नचिकेता संवाद, चूड़ाला- शिखरध्वज संवाद, अमरकथा, वामन बलि संवाद, ब्रह्मदर्शनी, श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ इत्यादि अनेक ग्रन्थों की रचना की है।

उन्होंने ही संतों जिज्ञासुओं भक्तों के मिलन का एक वार्षिक महा उत्सव चैत्र मेले की स्थापना की थी। यह चैत्र मेला वर्तमान में भी प्रत्येक वर्ष बड़ी धूम धाम के साथ इसी अमरापुर स्थान, जयपुर में मनाया जाता है। इस कुम्भ सदृश महान् मेले में न केवल प्रेम प्रकाश पंथ के साधु संत, विद्वान, गुणिजन पधारते हैं, अपितु देश दुनिया से गायक, भजनीक और अन्य संतों महात्माओं का भी सुन्दर समागम इस महा उत्सव में होता है। ४ दिन तक भक्ति-ज्ञान-कर्म की ऐसी परम पावन त्रिवेणी प्रवाहित होती है जिसमें डुबकी लगाकर हजारों हजार प्रेमी, सत्संगी, गुरुमुख, जिज्ञासु अपना जीवन सफल करते हैं।

आइये, मुख्य प्रवेशद्वार से अमरापुर स्थान के भीतर चलें. अन्दर प्रवेश होते ही सीधे हाथ की ओर छोटा सा उद्यान है जहाँ विभिन्न प्रकार के फूल और वृक्ष हैं, इसमें हरी हरी घास से मालियों ने कलात्मक रूप से 'सत्नाम साक्षी' भी लिख रखा है। बायें हाथ की ओर एक गोशाला है, जहाँ पर लगभग १५ से लेकर २५ गायों तक की सेवा-सुश्रूषा होती रहती है।

मुख्य प्रवेशद्वार के सीध में ही आता है 'गुरुमुख द्वार' जो कि प्रेम प्रकाश मण्डल की एक महान् विभूति अवधूत स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज की पावन स्मृति में बना हुआ है। गुरुमुख द्वार के बाद, एक 'विशाल सत्संग हॉल' है, जिसमें पाँच हजार श्रोतागण सुविधापूर्वक बैठकर सत्संगानन्द ले सकते हैं। इसका एक तिहाई हिस्सा कवर्ड है तो शेष खुले भाग को कवर्ड करने के लिए स्टील के खम्भ जगह-जगह स्थायी रूप से लगे हुए हैं, जिसका सहारा लेकर विशेष दिनों में आवश्यकतानुसार शामियाना लगा दिया जाता है। यहाँ पर प्रातः और सायंकाल को अनिवार्य रूप से सत्संग, प्रार्थना, पूजा आरती नियमित रूप से होती है। विशेष त्योहारों, पर्वों, उत्सवों पर अखण्ड भण्डारे का आयोजन भी किया जाता है।

सत्संग हॉल में एक तरफ गुरुमुख द्वार के दाहिनी ओर श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का 'धर्म ध्वजा' स्थापित है। तो इसके थोड़ा आगे चलने पर 'यज्ञशाला' बनी हुई है। जिसमें विधि विधान से ज्ञाता पण्डितों द्वारा यज्ञ-हवन विशेष अवसरों पर कराया जाता है। सत्संग हॉल के ढके भाग में विशाल आकार में गुम्बद बना हुआ है जो दूर-दूर से ही प्रेमियों को आकर्षित करता है।

सत्संग हॉल में व्यास पटल के ठीक थोड़ा ऊपर भगवान लक्ष्मी-नारायण जी की अत्यंत सुंदर प्रतिमा स्थित है, जिसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है, उसके पश्चात् केन्द्र में गुरुदेव के भव्यतम श्रीमंदिर के दर्शन होते हैं। इसमें मंदिराकार में गुम्बदयुक्त संगमरमर के तीन प्रकोष्ठ बने हुए हैं इसमें केन्द्रीय प्रकोष्ठ में आचार्यश्री गुरुदेव सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज, व दायीं ओर वाले प्रकोष्ठ में सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के मनमोहक सुंदरतम श्रीविग्रह स्थापित हैं एवं बायीं ओर वाले प्रकोष्ठ में आचार्यश्री द्वारा उपयोग किये गये वस्त्र, कमण्डल एवं चरणपादुका तथा सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज द्वारा प्रथम सिंध यात्रा के समय खण्डू-टंडोआदम से लाई गई पावन रज के दर्शन भी प्रेमियों को होते हैं। सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज, सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के दिव्य दर्शनों के बाद दायीं ओर के भित्ति में ही सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज, सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के मनमोहक स्वरूपों के दर्शन से मन मयूर आनन्दित हो उठता है। इस श्रीमंदिर के दर्शन सत्संग हॉल के केन्द्र में बैठे श्रोता प्रेमियों को भी सहजता से होते हैं। इस श्रीमंदिर कक्ष में परिक्रमा-पथ भी बना हुआ है, इस परिक्रमा-पथ पर आचार्यश्री द्वारा कहे गये दोहे सुंदर लिखावट में दीवारों पर अंकित हैं। राजस्थानी स्थापत्य कलायुक्त इस गुम्बदनुमा मंदिर के केन्द्रीय भाग में भगवान की रासलीला, रामदरबार, शिव परिवार, भगवान श्रीकृष्ण का कुरुक्षेत्र में अर्जुन को उपदेश, भगवान विष्णु का क्षीरसागर में विराजमान होना, भगवान झूलेलाल इत्यादि अनेक कलाकृतियाँ एवं भित्तिचित्रों के दर्शन होते हैं। ये सब काँच एवं विभिन्न रंगों के सम्मिश्रण से बनाये गये हैं। श्रीमंदिर के आगे चलने पर ग्रंथ मंदिर के दर्शन होते हैं जहाँ पर श्री प्रेम प्रकाश पंथ का परम पावन 'श्रीप्रेम प्रकाश ग्रन्थ' विराजमान है।

इसके दर्शनों पश्चात् आगे नीचे की ओर सीढ़ियाँ बनी हुई हैं, इन सीढ़ियों के आरम्भ में 'समाधि

स्थल’ लिखा हुआ है, ऐसी सीढ़ियाँ भगवान लक्ष्मी-नारायण मंदिर के पहिले भी बनी हुई हैं जो समाधि स्थल की ओर प्रेमियों को ले जाती हैं। इन सीढ़ियों से होते हुए श्रीमंदिर के ठीक नीचे समाधि साहब के दर्शन होते हैं। आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज व सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की मंदिराकार चित्ताकर्षक समाधियों के दर्शन करके प्रेमीजन आनन्द विभोर हो जाते हैं। समाधियों के एक ओर सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के अत्यन्त मनोहर चित्र स्वरूप जो कि समाधिस्थ अवस्था का है, के दर्शन होते हैं। यहाँ पर दर्शक प्रेमी कुछ देर बैठकर ध्यान-सुमरण का आत्मानन्द भी लेते हैं इसके लिए कई आसन भी रखे हुए हैं। समाधि स्थल में भी परिक्रमा-पथ बना हुआ है और इनकी दीवारों पर आचार्यश्री के आध्यात्मिक अर्थ से परिपूर्ण दोहे सुंदर अक्षरों में अंकित हैं। दर्शनानन्द से परिपूर्ण प्रेमी जब ऊपर आता है तो प्रत्येक श्रद्धालु को त्रैलोक्य में अनोखे स्वाद को लिये, आचार्यश्री का **‘ढोढा-चटनी’** प्रसाद मिलता है जिसे खाकर प्रेमी गद्गद् हो बाबा टेऊराम भगवान के प्रति कृतज्ञता से भर उठता है। ढोढा-चटनी ज्वार इत्यादि किसी अन्न से बना रोटी का टुकड़ा, उस पर पुदीने-धनिया, हरी मिर्च मसाले मिश्रित बनाई हुई चटनी में षट्स से भी बढ़कर स्वाद और आनन्द है; क्योंकि यह प्रेम-स्नेह भावना से सिंचित रहता है, इसलिये ही इसमें अद्वितीय स्वाद का आनन्द मिलता है।

श्री अमरापुर दरबार के यात्री-निवास का काया- कल्प अभी कुछ वर्षों पूर्व ही हुआ है। सात मंजिला इस नवीनतम यात्री-निवास में सैकड़ों कमरे सर्वसुविधायुक्त बने हुए हैं। यह यात्री-निवास-भवन तीन लिफ्ट सुविधाओं से युक्त है। इसके एक भाग में ‘प्रेम प्रकाश यात्री विश्रामगृह’ कार्यरत रहता है। इस विश्रामगृह में चैत्र मेले, गुरुपूर्णिमा इत्यादि शुभ दिवसों को छोड़कर आम हिन्दू यात्रियों को यहाँ पर नाममात्र शुल्क पर विश्राम कक्ष उपलब्ध होता है। प्रेमप्रकाशी प्रेमी जो कि अपने शहर के आश्रम से पत्र लिखवा कर लाते हैं उनको दरबार साहब में नियमानुसार रहने की सुविधा मिलती है।

सत्संग हॉल के परिक्रमा पथ में ही गुरुदेव का निवास कक्ष व संतों के लिए द्विमंजिलीय निवास भवन बना हुआ है। इसके आगे चलने पर भोजन भण्डारा तैयार करने के लिए रसोईघर बना हुआ है इसी से लगता हुआ बड़ा हॉल जिसमें संतजन व प्रेमीगण बाबा टेऊराम की भोजन प्रसादी पाते हैं।

इसके बाद जनसुविधाओं का द्विमंजिली भवन जो कि अभी गुरुपूर्णिमा पर ही नवीन रूप में आकार ले चुका है, के समीप एक बड़ा द्वार भी बना हुआ है जिसे जरूरत के आधार पर खोला जाता है। यहीं पर समीप ही जलमंदिर में चैत्र मेले व अन्य अवसरों पर सेवाधारी प्रेमियों को जल व अन्य पेय पदार्थों का वितरण करते हैं। इसके समीप ही चबूतरा बना हुआ है जिसके पार्श्व में स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज का समाधि स्थल व अमरापुरेश्वर महादेव मंदिर (शिवालय) के दर्शन होते हैं। इस चबूतरे पर ही चैत्र मेला व अन्य शुभ अवसरों पर मुण्डन व जनेऊ संस्कार प्रेमी परिवार करवाते हैं।

मुख्य द्वार के बाहर आने पर बायीं ओर **‘स्वामी टेऊराम जलमंदिर’** बना हुआ है जहाँ पर सबेरे

से शाम तक निरंतर पुलाव इत्यादि का वितरण होता रहता है जिसे राहगीर खाकर जल पीकर तृप्त हो आगे बढ़ते हैं।

आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज सन् १९४२ में अपनी लीला संवरण कर ब्रह्मधाम पधारे, उनके पश्चात् आपकी धर्मपीठ पर विराजमान हुए सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज। नाम के अनुरूप ही सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अपनी ओजस्वी एवं मधुर वाणी से श्रोता प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर देते थे और आध्यात्मिक आनन्द की ऊँचाइयों की ओर ले जाते थे। ऐसे देव-दुर्लभ आनन्द की अनुभूति कराते थे, जिसका वर्णन शब्दों में तो नहीं ही किया जा सकता है। आज भी प्रत्येक रविवार को उनके प्रवचनों की कैसेट चलाई जाती है, तब खचाखच भरे सत्संग भवन में सभी प्रेमी एक अनोखी मस्ती में झूमने लगते हैं, स्वर से स्वर मिलाकर गाने लगते हैं, ताल देकर एवं ताली बजाकर उस आनन्द की अनुभूति करते हैं। स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने अपने गुरुदेव के ज्ञान, भक्ति, कर्म, सेवा और सत्संग के संदेश को घर-घर में पहुँचाया। १९७७ में सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के ब्रह्मगमन के पश्चात् प्रेम प्रकाश पंथ के संतों द्वारा सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज को गुरुगद्दी पर विराजमान किया गया। स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज एक उच्चकोटि के अत्यन्त पहुँचे हुए महात्मा थे। इस भयानक कलिकाल में जहाँ चारों ओर अशान्ति का साम्राज्य छाता जा रहा है, सद्गुरु महाराज जी ने प्रेम प्रकाश पंथ के नाम अनुरूप मधुर वाणी से प्रेम का प्रकाश फैलाकर ज्ञान की ऐसी दिव्यता प्रदान की जो आज भी प्रेमियों का मार्गदर्शन कर रही है।

१९६२ में सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज के अमरापुर गमन के पश्चात् संत मण्डल द्वारा सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज को श्री प्रेम प्रकाश पंथ का पीठाधीश्वर बनाया गया। स्वामी हरिदासराम जी महाराज तत्ववेत्ता, शास्त्र मर्मज्ञ, उच्च कोटि के विद्वान महापुरुष थे। आप विनम्रता, गुरुभक्ति, वैराग्य की ज्वलन्त मूर्ति थे। आपने प्रेमियों को विवेकाधीन सत्मार्ग दिखाते हुए गुरुदेव की प्रेमाभक्ति की ओर मोड़ा।

सन् २००० में सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के अमरापुर धाम पधारने पर श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के संतों द्वारा सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज को प्रेम प्रकाश पंथ की बागडोर सौंपी गई। आपके नेतृत्व में आज श्री प्रेम प्रकाश मण्डल नई ऊँचाइयों को छू रहा है। आश्रम/मंदिरों के विस्तार के साथ आपके द्वारा प्रेमियों को अनेक तीर्थधामों के दर्शनों का आनन्द दिया गया है। कुम्भ मेलों पर विशालतम छावनियों के द्वारा हजारों हजार प्रेमियों को सत्संग भजन भोजन आवास का आनन्द आपकी छत्रछाया में ही मिला है। आपकी सुमधुर वाणी द्वारा वचनमृतों की अमृतवर्षा जब होती है तो उपस्थित हजारों प्रेमी तन्मय होकर प्रभुरस का आनन्द पाते हैं।

॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥

चैत्र मेला सिन्धी बारहवीं तारीख को ही क्यों.. ?

प्रेम प्रकाश मण्डल का, चैत्र मेला अभिराम ।

संतजनों का दरस कर, पाओ आत्मराम ॥

मिलो मिलाओ मिल रहो, मिलो तो मेला होय ।

अन्तर आत्म जे मिले, मेला कहिये सोय ॥

अखण्ड भारत देश! अनोखा संत-समागम! कुम्भ सदृश विशाल चैत्र मेला! भक्ति-भाव से ओत-प्रोत! भजन- भोजन का भण्डारा... सत्संग गंगा में स्नान करने का सुअवसर...जीव का परमात्म से मिलन...अध्यात्म ज्ञान चर्चा... नाम-दान-स्नान का त्रिवेणी संगम... युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज द्वारा स्थापित विश्व विख्यात चैत्र मेला! प्रेम प्रकाशियों का महाकुम्भ मेला! लघु काशी जयपुर गुलाबी नगर की प्रमुख शान! ऐसा है प्रेम प्रकाश मण्डल का चैत्र मेला... एक समय टण्डा आदम में स्थित श्री अमरापुर दरबार (डिब) पर कुछ साधु संत-महात्मा एवं भक्तजन एकत्रित हुए। उन्होंने सद्गुरु महाराज जी को दण्डवत् प्रणाम किया और हाथ जोड़कर विनती करने लगे कि हे भगवन्! आप तो सैलानी संत महापुरुष हैं... कभी कहाँ तो कभी कहाँ... जीवों के उद्धार हेतु यत्र-तत्र भ्रमण करते हैं... नाम दान का उपदेश देते हैं। जन- जन के हृदय में ज्ञान का दीप प्रज्ज्वलित कर रहे हैं। अंधकार में डूबे हुए जीवों को सत्मार्ग की राह दिखला रहे हैं। चल तीर्थ के समान सत्संग गंगा में स्नान करवा रहे हैं। अज्ञानता की नींद में सोये हुए लोगों को जगा रहे हैं। किन्तु श्री अमरापुर दरबार (डिब) पर अनेक संत- महात्मा एवं श्रद्धालुगण दूर-दूर से आपके दर्शनों के लिये यहाँ आते ही रहते हैं। आप तो सदैव सैलानी हैं अर्थात् भ्रमण करते रहते हैं, और इस स्थान डिब पर आपका रहना बहुत कम समय के लिये ही होता है। इस कारण प्रेमी भक्तजन आपके दर्शनों से वंचित निराश होकर लौट जाते हैं। अतः आपश्री के पूज्य श्रीचरणों में प्रार्थना है कि ऐसे कुछ दिन निश्चित कर दीजिए, जिससे संत, भक्त प्रेमी आकर आपका दर्शन व सत्संग सुनकर अपना जीवन सफल बना सकें।

इस पर सद्गुरु महाराज जी ने सभी संत- महात्मा, सत्संगी प्रेमियों को एक बैठक में प्रस्ताव देते हुए कहा- 'इस डिब (बालू रेत का टीला) पर चैत्र मास की सिन्धी बारहवीं तारीख को रेत का

चबूतरा और झोंपड़ियाँ बनाकर सत्संग का शुभारम्भ किया गया था। अतः चैत्र मास की सिन्धी बारह तारीख से लेकर सोलह तक पंच दिवसीय संत-महात्मा, भजन मण्डलियाँ, प्रेमी भक्तजन आदि सभी के लिये अखण्ड भजन-भोजन का समागम रखना चाहिए।'

सद्गुरु महाराज जी का यह सुझाव सभी संत-महात्माओं, भक्तजनों ने प्रसन्नचित्त होकर स्वीकार किया। चैत्र मास में बसन्त ऋतु होती है। रातें ठण्डी और सुहावनी होती हैं। गर्मी भी अधिक नहीं पड़ती। हिन्दू संस्कृति का नव वर्ष भी चैत्र मास से प्रारम्भ होता है। फसल कटाई होकर इस समय किसान भी फुर्सत में होते हैं (उस समय सिन्ध में अधिकांश लोग खेती-बाड़ी का कार्य ही करते थे) इसी मास में चेटीचण्ड, श्री रामनवमी, नवरात्रा, श्री हनुमान जयंती आदि पर्व-उत्सव मनाये जाते हैं। अतः इस मास में 'मेला' लगाना अति उत्तम होगा और इस मेले को 'चैत्र मेला' के नाम से कहा जाये।

इस पवित्र आध्यात्मिक चैत्र मेले में दूर-दूर के प्रेमी भक्तजन, संतों के श्रीमुख से सत्संग गंगा में स्नान कर लाभ उठा पायेंगे। इस प्रकार 'चैत्र मास की बारहवीं तारीख' को चैत्र मेला प्रतिवर्ष मनाये जाने का निश्चय हुआ।

आज भी सिद्ध तपस्वी युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज द्वारा स्थापित कुम्भ सदृश विशाल आध्यात्मिक 'चैत्र मेला' लघु काशी कही जाने वाली गुलाबी नगरी जयपुर के पावन तीर्थ स्थल श्री अमरापुर स्थान (डिब्र) पर प्रतिवर्ष बड़ी भव्यता एवं श्रद्धा, भक्ति-भाव के साथ मनाया जाता है। जिसमें लाखों भक्त सत्संग, सेवा का लाभ लेते हैं।

पाँच दिनों तक चलने वाले कुम्भ सदृश चैत्र मेले में युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज का अखण्ड भजन व भोजन (भण्डारा) 'लेने वाले बाबा टेऊराम-देने वाले बाबा टेऊराम' उक्ति को चरितार्थ करता हुआ चलता है। इस अवसर पर असंख्य श्रद्धालुगण ज्ञानसरिता में डुबकी लगाकर अपने जीवन को धन्य-धन्य बनाते हैं।



॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥

ऐसे बना लघु काशी जयपुर में तीर्थ श्री अमरापुर स्थान

अब तो अमरापुर बनी - अद्भुत आलीशान ।
तांका दर्शन करत ही - आनन्द होय महान ॥

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य परम पूज्य युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज, एक समय यात्रा करते हुए हरिद्वार, काशी, दिल्ली, मथुरा वृन्दावन होकर गुलाबी शहर जयपुर पहुँच गये। उस वक्त युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज का कोई भी परिचित भक्त जयपुर में नहीं हुआ करता था। चाँदपोल दरवाजे के पास श्री हनुमान मंदिर के समीप एक महात्मा की कुटिया थी। संतश्री ने बड़े ही श्रद्धा प्रेमभाव से सद्गुरु महाराज जी को अपनी कुटिया में रहने के लिए स्थान दिया। स्वामी जी सन्त मण्डली के साथ तीन-चार दिन जयपुर शहर रहकर प्रमुख स्थानों के दर्शन किए। एक दिन सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज, स्वामी सर्वानन्द जी संत मण्डली के साथ भ्रमण करते हुए स्टेशन की ओर निकल रहे थे- उसी मार्ग में उन्होंने एक सुरम्य जंगल देखा- आसपास का वातावरण बड़ा ही मनमोहक एवं वृक्ष पेड़ पौधों से बड़ा ही रमणीक लग रहा था- उसी के बीचों बीच सुन्दर पानी का एक तालाब बना हुआ था। वह स्थान बड़ा सुन्दर लग रहा था।

सद्गुरु महाराज जी ने सन्तों से कहा कि यह शहर सचमुच मनमोहक है- यहाँ के लोगों में प्रेम, भक्ति भाव व धर्म-कर्म में बड़ी आस्था दिखाई देती है और यह शहर तो सचमुच में बड़ा ही सुंदर रमणीक है। कहते हैं कि संत महापुरुषों के श्रीचरण जिस स्थान पर पड़ते हैं, वह तीर्थ बन जाता है तथा महापुरुष तपस्वियों के हृदय में जो भाव आते हैं वह स्वतः भगवद् प्रेरणा होती है कि इस भूमि पर 'अध्यात्म स्थल' होना चाहिए। संतों की तपस्या का प्रभाव- संकल्प शक्ति श्रीचरण का उस स्थान पर प्रभाव पड़ा और भगवद् प्रेरणा से समय पाकर वह फलीभूत हुआ और इस स्थान पर पवित्रतम तीर्थधाम श्री अमरापुर स्थान बना।

इस प्रकार सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज का मन जयपुर में रमा अवश्य था, किन्तु वे

अपने जीवन-काल में फिर जयपुर नहीं आ सके। हाँ, उनके उत्तराधिकारी श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के द्वितीय पीठाधीश्वर सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने इस बात को याद रखा और श्री गुरुदेव के संकल्प को साकार करते हुए १९४७ में देश विभाजन के कुछ समय बाद लघु काशी कहने वाले गुलाबी नगरी जयपुर में ही डेरा जमाया।

भगवद् कृपा व आचार्य जी के आशीर्वाद से उसी तालाब वाले स्थान पर श्री अमरापुर स्थान (पवित्रतम तीर्थ स्थल) बना। गुरुभक्त स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने बड़े लग्न, परिश्रम से बनवाकर सद्गुरु महाराज जी के संकल्प को साकार किया। आज वही पवित्र तीर्थ श्री अमरापुर स्थान, जयपुर श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का मुख्यालय है, जो आज विश्व के सुविख्यात तीर्थ स्थलों में माना जाता है। यहाँ पर भगवान श्री लक्ष्मी नारायण जी एवं पूज्य महाराज जी के श्री मन्दिर एवं 'समाधि स्थल' भी बने हुए हैं। यह आस्था, अध्यात्म और श्रद्धा का केन्द्र है, जहाँ प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु नत मस्तक होते हैं।



॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥

युगपुरुष सतगुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज का संक्षिप्त जीवन परिचय

सतगुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज का जन्म सिन्ध प्रदेश, हैदराबाद जिले के खण्डू गाँव के विक्रम सम्वत् १९४४, सिन्धी चार तारीख, आषाढ़ शुक्ल पक्ष, षष्ठी तिथि, शनिवार का दिन, प्रातः ५ बजे फूलवंशी, क्षत्रिय कुल में हुआ था !

जैसे प्रभु श्री राम का जन्म सरियु नदी, भगवान श्री कृष्ण यमुना नदी के तट पर हुआ वैसे ही स्वामी जी का जन्म भी सिन्धु नदी के पावन तट पर हुआ था !

स्वामी जी की “माता श्री” का नाम कृष्णा देवी और “पिता श्री” का नाम श्री चेलाराम जी था!

माता कृष्णा देवी स्वामी जी को गोद में लेकर प्रतिदिन मीठे स्वर से “शिवोऽहम्” व धामनाम की लोरी सुनाती थी !

पण्डित जयराम जी ने स्वामी जी के ग्रह नक्षत्र देखकर भविष्यवाणी की कि ‘यह बालक होनहार होगा तथा अवतार के रूप में कहलायेगा’ और फिर स्वामी का नाम “टेऊराम” रखा !

पिता चेलाराम जी ने ८-९ वर्ष की आयु में स्वामी जी को पाठशाला पढ़ने के लिए भेजा ! किन्तु पढ़ाई में मन नहीं लगा ! तब स्वामी जी ने केवल एक “ॐ” अक्षर ही कंठरस्त किया !

स्वामी जी १३-१४ वर्ष के हुए ! तब दादा साईं आसूराम जी महाराज से नाम-दीक्षा प्राप्त कर भगवत भजन में लग गए !

अवतारी महापुरुष सतगुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज ने अपना पंथ, ग्रन्थ, मंत्र एवं धाम अपने प्रचण्ड तप भक्ति ज्ञान के बल से बनाया !

पंथ : श्री प्रेम प्रकाश पंथ

ग्रन्थ : श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ

मंत्र : सतनाम साक्षी

धाम : श्री अमरापुर धाम

सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का सर्वप्रथम सिन्ध प्रदेश में रेत के टीले पर टण्डेआदम का निर्माण किया ! जिससे स्वामी जी को “डिब वाले-साईं के नाम” से भी जाना जाता था !

सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को सर्वप्रथम “भगवान श्री लक्ष्मीनारायण” के दर्शन हुए ! इसीलिए सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों में इष्टदेव “भगवान श्री लक्ष्मीनारायण” की प्रतिमा विराजमान की गई हैं !

सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के गादी के द्वितीय पीठाधिश्वर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने देश-विभाजन के पश्चात जयपुर में “श्री अमरापुर दरबार” का निर्माण किया ! जो आज श्री प्रेम प्रकाश आश्रम का मुख्यालय है !

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में टण्डेआदम व खंडू गांव की रज दर्शनार्थ रखी गयी हैं ! मंदिर के गर्भगृह में सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का समाधि स्थल बना हुआ है ! जहाँ हजारों प्रेमी नित्य-नियम से दर्शन, सुमरन का लाभ लेते हैं !

सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का साप्ताहिक जन्मदिन-शनिवार, मासिक जन्म चौथ एवं आषाढ़ मास में जन्म जयंती पूर्ण विश्व भर में बड़े श्रद्धा भक्ति भाव से मनाया जाती है !

स्वामी जी का मुख्य प्रसाद ढोढ़ा-चटनी हैं ! जो कि सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों में वितरण किया जाता हैं !

सतगुरु महाराज जी की वाणी को “श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ” में संजोया गया है ! जो सभी वेद शास्त्रों का सार तत्व है !

सतगुरु महाराज जी द्वारा रचित अनुभव की वाणी सोलह शिक्षाएँ भी है ! जिसमें पूरे वेद शास्त्रों का ज्ञान समाया हुआ है !

इसी प्रकार सुखमनी साहेब की तरह सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा ब्रह्म दर्शनी की रचना भी की गई ! जिसमें पूरा ब्रह्म ज्ञान समाया हुआ है ! जिसका नित्य नियम से पाठ करना चाहिए!

सतगुरु महाराज जी के शांति के दोहे जिसका पाठ करने से शांति मिलती है !

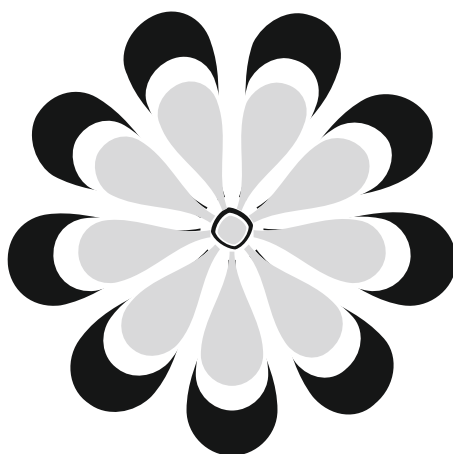
वर्तमान में सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के देश-विदेश में लगभग १५० प्रेम प्रकाश आश्रम बनें हुए हैं ! जहाँ नित्य नियम भजन सत्संग होता है !

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में विशाल गौशाला बनी हुई है ! जहाँ नित्यप्रति गौ माता की सेवा होती है ! इसी प्रकार जयपुर के मानसरोवर में विशाल गोशाला बनी हुई है ! जिसमे लगभग २५० गौ माता है !

स्वामी जी के नाम से रामेश्वर धाम एवं उज्जैन में स्वामी टेऊँराम घाट भी बने हुए है !

सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के नाम से अनेक स्थानों पर सद्गुरु टेऊँराम चौक, मार्ग, सर्किल, पथ, गोशाला, विद्यालय, बाग बगीचे एवं सेवा समितियां आदि बनी हुई है !

महायोगी युगपुरुष आचार्य सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ५५ वर्ष की आयु तक धराधाम पर रहें ! फिर अपनी लीला समेट कर सिंधी चार तारीख, शनिवार , पुरुषोत्तम मास, सम्वत् १९९९ को पंच भौतिक शरीर का त्याग कर पारब्रह्म की ज्योति में समा हो गये !



युगपुरुष आचार्य सतगुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज का पावन जीवन दर्शन 51 सवालों के जवाब....

१. नाम : आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी...
२. जन्म : सन १८८७, (सम्वत् १९४४)
३. दिवस-दिन : पावन शनिवार दिवस...
४. मास : आषाढ़ मास
५. समय : प्रातः काल ५ बजे...
६. तिथि : षष्ठी तिथी... (सिंधी चौथी तारीख)
७. पक्ष : शुक्ल पक्ष...
८. कुल : फुलवंशी- क्षत्रिय कुल...
९. जन्म स्थान : पवित्र सिंधु नदी का पावन तट...
१०. जिला : हैदराबाद...
११. प्रदेश : सिन्ध देश...
१२. गाँव : खंडू गाँव...
१३. पिता : श्री चेलाराम जी....
१४. माता : माता कृष्णा देवी जी...
१५. श्री गुरुदेव : गुरुदेव श्री साई आसूराम जी महाराज....
१६. नामकरण संस्कार : टेऊ (टेऊराम)...
१७. ब्राह्मण द्वारा की गयी
भविष्यवाणी : यह बालक होनहार होगा और अवतार रूप में कहलायेगा...
१८. अध्ययन : ॐ का साक्षात्कार, प्रभु चिंतन में मग्न...
१९. भगवद् प्रथम दर्शन : सिंधु नदी जल के अंदर वरुण देवता के साक्षात् दर्शन...
२०. जिज्ञासा : आत्म चिंतन कर भगवद प्राप्ति करना...

२१. इष्टदेव : भगवान श्री लक्ष्मी नारायण जी....
२२. पल्लव : आशवंदी गुरु तो दर आई, तुम बिन ठौर....
२३. तपस्या स्थान : गहन जंगल, श्मशान, गहन गुफाओं, रेत का टीला,
सिंधु नदी का पावन तट..आदि...
२४. पंथ-मण्डल की स्थापना : प्रेम प्रकाश पंथ....
२५. महामंत्र : ॐ श्री सतनाम साक्षी...
२६. आध्यात्मिक-महाग्रन्थ : श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ...
२७. अनुभवी वाणी : श्री अमरापुर वाणी... (हिंदी व सिंधी भजन)
२८. प्रातः कालीन प्रार्थना : गुरु मांगु खजाना भजन दा....
२९. ब्रह्मसंबन्धी पुस्तक : २५० पद्य की ब्रह्म दर्शनी...
३०. वस्त्राभूषण : खादी का चोला... टोपी...
३१. कर-कमलों में शोभित : चिप्पी, लाठी, इकतारा...
३२. चरण पादुका : लकड़ी का खड़ाऊँ...
३३. भजन- आसन मुद्रा : सिद्धासन, पद्मासन...
३४. आध्यात्मिक रचनाएँ : अमरकथा, ब्रम्हदर्शनी, दोहावली, अमरापुर वाणी,
कवितावली- छन्दावली... सलोक माला आदि....
३५. ऐतिहासिक सिद्ध स्थल : श्री अमरापुर दरबार (डिब) टंडाआदम- सिन्ध...
३६. भगवद् स्वरूप का किस- : भगवान वरुणदेव, मां लक्ष्मी देवी एवं
किस रूप में साक्षात् दर्शन लक्ष्मीनारायण भगवान.... ऐसे ३ बार दर्शन हुए....
३७. नाम प्रसिद्धि : डिब वाले - साईं टेऊँराम बाबा...
३८. महाप्रसाद : डोडा चटनी महाप्रसाद...
३९. प्रमुख उद्देश्य : प्रेम का प्रकाश फेलाना,
सनातन धर्म का प्रचार- प्रसार करना...
४०. कुल मुख्य शिक्षाएं : १६ शिक्षाएं....
४१. १०८ पद्य का नाम : सलोक माला...

४२. ब्रह्मलीन : सम्वत- १९६६, पुरषोत्तम मास, सिंधी तारीख चौथी,
दिन- शनिवार...
४३. निरन्तर प्रवाहित : साईं टेऊंराम बाबा का अखण्ड भजन व
भोजन- भंडारा प्रसाद...
४४. प्रेम प्रकाश मंडल के : देने वाले साईं टेऊंराम बाबा लेने वाले साईं टेऊंराम बाबा...
आधार स्तम्भ
४५. धरा धाम पर कितने वर्ष : ५५ वर्ष....
तक निवास किया
४६. अंशावतार : भगवान शिव स्वरूप.. साईं टेऊंराम बाबा...
४७. वर्तमान में प्रमुख तीर्थ स्थल : पावन श्री अमरापुर स्थान- जयपुर...
४८. साईं द्वारा दीक्षित उस : स्वामी गवालानंद, स्वामी सर्वानन्द, स्वामी गुरमुखदास,
समय के ६ संतों के नाम स्वामी जीवनमुक्त, स्वामी शांतिप्रकाश, स्वामी बसन्तराम,
स्वामी उद्धवदास, स्वामी चन्दनराम, स्वामी माधवदास....
आदि लगभग ८४- ८५ संत थे !
४९. समाधि स्थल : श्री अमरापुर दरबार, जयपुर में...
५०. साईं के नाम से २ घाट : कहाँ बने हुए है : उज्जैन नगरी और रामेश्वरम धाम में...
५१. साईं के नाम से गौशाला : साईं टेऊंराम गौशाला- जयपुर....
कहाँ है

मंगलमय गुरु रूप है, मंगलमय गुरु धाम है !

मंगलमय गुरु नाम है, धनगुरु टेऊंराम !!

सतगुरु स्वामी टेऊंराम महाराज जी के पावन “श्रीचरणों” में कोटिशः नमन

प्रेम प्रकाश पंथ जी स्थापक- प्रवर्तक....

महायोगी युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज

जीअं सागर बेअंत आ - तीअं बेअंत फकीर ।

असांजे हिंद ऐ सिंध में अनेकानेक संत-महापुरुष थिया आहिन ! जहिं पहिंजी- पहिंजी रहणी, बहणी, सहणी ऐ कहणी सां पूरे जहान में 'भक्ति- ज्ञान- कर्म' जी मिसाल कायम कई आहे !

इन्ही संत-परंपरा जी कड़ी में सिन्ध जा महान 'युगपुरुष सद्गुरु साईं टेऊराम जी महाराज' भी हिक दरवेश संत फकीर थिया आहिन !

जहिंजो जन्म सम्बत-१६४४, आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष (सिंधी चौथी) 'शनिवार' सन् १८८७ सिंध जे खण्डु गोठ में थियो हो ! उन्हनि जे पिता जो नालों श्री चेलाराम एं माता जो नालों कृष्णा देवी हो ! घर मे आध्यात्मिक वातावरण जे करे नंदपण खां ही उन्हजो मन भक्ति एं भगवान जे भजन में लगी ब्यो हुओ ! बचपन में ही 'ॐ' नाम जो जाप करें पहिंजे पाण खे सुजाणे वतो हो ! हिन संसार में भगवान खां सिवाय कुछ भी सच नाहे !

नढहिं उम्र में हि 'सद्गुरु श्री साईं आसूराम महाराजनि' खे पहिंजो गुरु बणाये 'नाम-दान' जी शिक्षा प्राप्त कयनि ! पहिंजे जीवनकाल में भक्ति- साधना सा गढ़- गढ़ व्यापार, खेती- बाड़ी एं घर-परिवार जो कार्यभार भी संभालनि ! पर कुछ समय खां पोई सब कुछ छडे भगवान जी भक्ति करण जंगल में हली विया ! धीरे-धीरे "हिन्दु सनातन धर्म" जो प्रचार कन्दे 'श्री प्रेम प्रकाश मण्डल' जी स्थापना करे, प्रेम जी अलख जगाई !

सभिनि प्रेमनि खे सतमार्ग जो रस्तो देखारे करें - 'सत्नाम साक्षी' महामंत्र जो उपदेश दिनो! परमात्मा जो नालो ही सत आहे ! सजे संसार उन परमात्मा जी ज्योति जो ही चिमकार दिसण इंदो आहे !

उन्हनि सां गड- गड पहिंजी लिखयल अनुभव जी वाणी ! जो कि 'श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ' नाले सां विख्यात आहे ! जाहिंमें धर्म-कर्म-भक्ति-ज्ञान सां भरियल भजन, दोहिडा, पद, छन्द, सलोक माला आदि अनुभव जो अखुट ज्ञान खजानों भरियल आहे ! जहिंखे पढनि सा मन के शांति मिलन्दी आ ऐ मन भक्ति में लगी वेन्दो आहे !

साईं सिंध में इक 'रेत जे टीले' ते वेही तप- तपस्या - भजन- साधना कई हुई ! उते भक्ति जे प्रभाव सा इक पवित्र स्थान ठही वियो ! जहिंजो नालों "श्री अमरापुर स्थान" रखयो वियो ! उहा "डिब" जे नाले सा प्रसिद्ध आहे ! साईं खे 'डिब वारो साईं' भी चाहियो वेन्दो आहे !

साईं जो मुख्य प्रसाद ढोढो चटनी आहे ! जेको हर श्री प्रेम प्रकाश आश्रमनि में हलायो वेन्दो आहे !

साईं जा २ डिह विशेष धूमधाम सां मनाया वेन्दा आहिन ! "शनिवार" जो पावन डिहाडो एं हर महिने "साईं जी चौथ" ! जेकी जगत प्रसिद्ध आहे ! (साप्ताहिक ऐ मासिक जन्मदिह)

अजु वर्तमान में साईं जो प्रमुख तीर्थ स्थान- जयपुर में "श्री अमरापुर स्थान" नाले सां विश्व प्रसिद्ध आहे ! जिते रोज हजारे प्रेमी- श्रद्धालु सत्संग, सेवा एं दर्शन जो लाभ वठन्दा आहिन ! हिते साईं जो पवित्र "समाधिस्थल" भी ठहियल आहे ! जिते प्रेमी नाम- सुमरण कन्दा आहिन !

मन जी शांति जे लाये साईं जा लिखियल "शांति जा दोहा" उन्हि जो नित्य नियम पाठ करण धुरिजे ! साईंअ १०८ सलोक माला जी बि रचना कई आहे !

सुखमनी साहब वांगुर- साईं जी "ब्रह्मदर्शनी" पुस्तक भी लिखियल आहे ! जहिमें पंजविह दश पदयूँ आहिन ! घर- घर में प्रेमिन जे द्वारा उन्हीं जो पाठ थिन्दो आहे !

साईं जी १६ शिक्षाऊं सा गढ़ अनन्त सामाजिक, धार्मिक शिक्षाऊँ बि आहिन - समय जो कदर कजे ! पहिंजे जाति ऐ धर्म जी रक्षा कजे ! गौ माता एं पहिंजे माता- पिता जी सेवा कजे ! सत- शास्त्र जो अधध्यन कजे ! कुड न गाल्यजे ! पाप- अधर्म न कजे ! सभिन मूक प्राणिन जी सदैव रक्षा ऐ सेवा कजे !

साईंजनि जीवनभर सतमार्ग ते हली, सभिन खे प्रेम भक्ति जो रस्तो देखारे ५५ सालनि जी नड्डी उम्र में पहिंजी लीला पूरी करे, सम्बत- १६६६ - पुरषोत्तम महीनों- शनिवार डीह पंचभौतिक शरीर जो त्याग करें पारब्रह्म जी ज्योति में समाएझी व्या !

अज उन्हनि महापुरुषनि जा हिंद- सिंध में अनेक स्थान आहिन ! जिते प्रेमी-सत्संगी सेवा,सुमरण, सत्संग ऐ दर्शन जो लाभ वठन्दा आहिन !

अहिडे युगदृष्टा- तपस्वी महायोगी जे "श्री चरणों" में कोटि- कोटि नमन !

गुरु तीर्थ स्थल

श्री अमरापुर स्थान

प्रेम प्रकाशियों के लिए, श्री अमरापुर स्थान ।

सात द्वीप नौ खण्ड में, तीर्थ यही महान ॥

श्री गुरुदेव के धाम की महिमा अत्यंत हैं ! जिस स्थान पर गुरु का वास हो ! वहाँ की रज मस्तक पर धारण करने से जिज्ञासु अपने जन्म- जन्मान्तरों के पापों से मुक्त हो जाता हैं ।

गुरु के धाम में सद्गुरु के नित्य निवास से निरन्तर उनका अलौकिक सामिप्य का सुख पाकर भक्तगण आनन्द मग्न हो जाते हैं! इस पुण्य स्थली का ऐसा महात्म्य है कि एक बार दर्शन पाकर ही भक्तजन धन्य- धन्य बन जाते हैं !

इस तपोभूमि पर ना जाने कितने योगी- वैरागी- तपस्वी- सन्त -महापुरुषों ने पवित्र धारा पर पग धरे हैं ! जैसा कि कहा गया है-

से सब स्थल तीर्थ जानो, सन्त जहाँ पग धरते हैं ॥

उन्हीं सत-महापुरुषों की तपस्या का प्रभाव अभी तक व्याप्त हैं - इस पवित्र तीर्थ स्थल पर !

श्री अमरापुर स्थान अर्थात् यथा नाम तथा गुण के अनुरूप अमर लोक- अमर पद- अमृतत्व- आत्म ज्ञान की प्राप्ति का सरल व सुगम स्थान ! इस स्थल में प्रवेश करते ही मन भक्तिमय- ज्ञानमय- आनन्दमय सा हो जाता हैं ! गुरु दर्शन करने से संतप्त हृदय में आत्मसुख व शान्ति की अनुभूति प्राप्त होने लगती हैं !

श्री अमरापुर स्थान को पूर्णांक भी मान सकते हैं ! “अमरापुर” का नाम भी १०८ (माला) के अन्तर्गत आता है ! यह भी एक ब्रह्म शब्द है !

“अमरापुर” इसमें सात अक्षर हैं :-

1.	अ	:	1
2.	म	:	25
3.	र	:	27
4.	आ	:	2
5.	प	:	21
6.	उ	:	5
7.	र	:	<u>27</u>
	कुल	:	<u>108</u>

इसी प्रकार श्री अमरापुर स्थान भी १०८ पूर्ण अंकों से परिपूर्ण है ! पूर्णा ब्रह्मानंद की प्राप्ति के लिए नित्य प्रति 'श्री अमरापुर स्थान' का दर्शन करने से आत्म पद की प्राप्ति होगी !



चालीहा व्रत-महिमा

दर्शन से किया - चालीहा व्रत पूर्ण

हरि भक्त के संग से, हरि भक्ती मिल जाय ।

कह टेऊं हरि भक्ति से, हरि का दर्शन पाय ।

संतों-महापुरुषों का इस धरा धाम पर अवतरण भी अनुपम-विलक्षण-दिव्यतम होता है, उनके आने का उद्देश्य-- मानव के मन को उस अविनाशी प्रभु परमात्मा की ओर मोड़ना है! जिसके लिए जीव का इस अमोलक मानव देह में आना हुआ! महापुरुषों के मंगल प्राकट्य के इतिहास इस बात के प्रमाण हैं।

सिंध-हिंद के महानतम संत शिरोमणि, महायोगी, युगपुरुष, सर्व उपमा योग्य, “सद्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज” का इस धरा धाम पर आना और सबके कष्ट-क्लेश मिटाकर हम सबको उस सत्मार्ग की ओर लगाने का समूचा श्रेय माता कृष्णादेवी के चालीस दिवसीय व्रत उपासना को ही जाता है! सर्वप्रथम माता कृष्णादेवी ने ही 40 दिन फलाहार खाकर एवं भगवत् नाम सुमरण कर चालीहा व्रत पूर्ण किया था। चालीसवें दिन स्वप्न में भगवान शिव जी ने आकर दर्शन दिया और बोले- हम शीघ्र ही आपके घर अवतार लेकर आ रहे हैं। ऐसा आश्वासन (वरदान) पाकर माता कृष्णादेवी ने श्रद्धा भक्ति-भाव से 41 वें दिन उपवास पूरा किया। समय पाकर माता को तपस्या का फल मिला और हम सबके कल्याण कारक ईश्वरांश मंगलमूर्ति सद्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज ने इस धरा-धाम पर अवतरण लिया।

हम सबके हृदय में भी गुरुदेव व प्रभु परमात्मा के प्रति भक्ति-भाव प्रगाढ़ हो. इसी श्रद्धा-प्रेम से आज समस्त संसार इस चालीस दिवसीय चालीहा व्रत उपासना पर्व को श्रद्धा भक्ति-भाव से मनाते हैं और इसके लिए विविध धार्मिक आध्यात्मिक अनुष्ठान पूर्वक सत्कार्य भक्तों द्वारा किये जाते हैं।

चालीहा का महात्म्य बहुत पुराना है! भगवान श्री झूलेलाल चालीहा महोत्सव भी सर्व मनोरथ सिद्ध करने हेतु भक्तों द्वारा मनाया जाता है. साथ ही अनेक देवी-देवताओं के ‘चालीसा’ भी प्रसिद्ध हैं- शिव चालीसा, हनुमान चालीसा, झूलेलाल चालीसा, दुर्गा चालीसा और साईं

टेऊराम चालीसा आदि. 'चालीहा महोत्सव' के अन्तर्गत इसका नित्य नियम से पाठ करने से मनइच्छित फल की प्राप्ति होती है।

सर्व समर्थ सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के स्वर्णिम काल का वह ममस्पर्शी प्रसंग, "साईं टेऊराम चालीहा व्रत उपासना" तत्कालीन समय में भी भक्तों द्वारा की जाती थी, इससे 'भक्त और भगवान की प्रगाढ़ता' के बारे में पता चलता है।

卐 माता पदीबाई को दर्शन देना 卐

यह बात उस समय की है जब माता कृष्णादेवी को गुरुधाम सिधारे अभी एक महीना ही हुआ था कि 'सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज' को प्रेमी भक्तों द्वारा पता लगा कि श्री गुरुदेव भगवान के दर्शनों की प्यास लिए गौसपुर के भाई मनाराम की धर्मपत्नी 'माता पदीबाई ने भी चालीहा व्रत रखा है' और वह प्रभु परमात्मा- गुरुदेव के दिये अखण्ड नाम का सुमरण कर रही है, उसका संकल्प है कि जब तक 'सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज' के दर्शन नहीं होंगे तब तक मैं कमरे से बाहर नहीं निकलूँगी और व्रत भी चलता रहेगा! ये बड़ा ही कठोर तप चल रहा था।

ऐसा दृढ़ निश्चय करके ही माता पदी बाई ने चालीहे व्रत की समय-सीमा को पूरा किया. माता पदी बाई ने व्रत पूरा हो जाने पर कमरे से निकलने के लिए घर वालों व पास पड़ोस रिश्तेदारों पंचों के अनुनय विनय को भी अस्वीकार कर दिया। माता पदी बाई भक्ति-भाव मिश्रित मृदुल वाणी में पूर्ण आस्था से बोली कि मेरे हृदय में गुरुदेव के प्रति प्रेम भाव सच्चा है और मेरी गुरुनिष्ठा अटूट है तो मेरे घर 'सद्गुरु साईं टेऊराम बाबा' जरूर आएँगे! अपनी दासी को दर्शन देने, तब ही चालीहा व्रत पूर्ण करूँगी, यह मेरा पक्का विश्वास है।

थक हारकर कंधकोट व गौसपुर के पंचों ने टण्डो आदम पहुँचकर पूज्य सद्गुरु महाराज जी को सारी बात बताई. करुणानिधान, भक्तों की हर शुभ इच्छाओं को पूरी करने वाले अर्न्त्यामी, सर्व त्रिद्वि-सिद्धि के मालिक, भक्तवत्सल, आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊरामजी महाराज! यह बात सुनकर तत्क्षण उठ खड़े हुए और बोले, चलो अभी चलते हैं. माता पदी बाई इतना कष्ट उठाकर प्रभु परमात्मा की भक्ति कर रही है. तो हम भी उस माता के अवश्य ही दर्शन करेंगे।

देखें! श्री गुरुदेव भगवान की कैसी भक्त वत्सलता- निर्मानता! कहाँ माता का संकल्प था कि मैं सद्गुरु महाराज जी के दर्शन करके ही व्रत खोलूँगी और कहाँ पूर्ण महायोगी परम दयालु

‘सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज’ कह रहे हैं कि हम उस माता के दर्शन करेंगे! इसे कहते हैं **भक्त और भगवान का अनन्य प्रेम !** भक्त की भगवान के प्रति अटूट श्रद्धा।

श्री गुरुदेव भगवान का मंगल आगमन गौसपुर में होते ही सर्वप्रथम माता पदी बाई को होता है- सद्गुरु महाराज जी का दिव्य दर्शन माता पदी कमरे से बाहर निकल कर सद्गुरु महाराज जी के श्रीचरणों में अत्यन्त प्रसन्न मन से कोटि- कोटि वन्दन करती है! उसके नेत्रों से प्रेम विह्वल अश्रुधारा बहने लगती है, जैसे भगवान श्रीराम का दर्शन पाकर माता शबरी के प्रेमाश्रु निकले थे- वैसे ही माता की आँखों से सजल धारा बह रही थी. तब श्री गुरुदेव भगवान ने अपना कृपा भरा वरद् हस्त उनके ऊपर रखा और उनका व्रत अनुष्ठान पूरा किया. तब वह माता बहुत गद्गद् प्रसन्नचित्त हुई।

तत्पश्चात् यहीं पर “**श्री गुरुदेव भगवान**” के पावन सानिध्य में हवन-यज्ञ अनुष्ठान, पूजा-पाठ एवं भजन-सत्संग का भव्य आयोजन हुआ! वहाँ के सभी प्रेमी ऐसा अद्भुत दृश्य देखकर बड़े प्रसन्न हुए! इसे कहते हैं भक्त और गुरु की अनन्त पराकाष्ठा! भक्त व भगवान का प्रेम!



ॐ श्री सत्नाम साक्षी
बह्मनिष्ठ महायोगी द्वारा अनुभव रचित वाणी

श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ

(आध्यात्मिक महाग्रन्थ)

प्रेम प्रकाशी प्रेमियों, रहो गुरु के पास ।
कह टेऊँ नित ही पढ़ो, श्री ग्रन्थ प्रेम प्रकाश ॥

श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के मूल आधार स्तम्भ
युगद्रष्टा ! युगपुरुष ! सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज !
(अनुभवी वाणी)

श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ साहब का प्रकाशन - सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, स्वामी गुरुमुखदास जी, स्वामी शान्ति प्रकाश जी, स्वामी बसन्तराम जी, स्वामी माधवदास जी आदि सन्तों के अथक प्रयास से सम्पन्न हुआ।

श्री ग्रन्थ साहब की रचना का प्रथम प्रकाशन 'सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज' के सानिध्य में लगभग पचास वर्ष पूर्व- सन् १९६१-६२ में हुआ था।

श्री ग्रन्थ साहब में हिंदी एवं सिन्धी (देवनागरी) भाषा का प्रयोग किया गया है । श्री ग्रन्थ साहब में कुल पृष्ठ संख्या- ७६५ हैं !

श्री ग्रन्थ साहब में हिन्दी भाषा में ६२१ भजन एवं सिन्धी देवनागरी लिपि भाषा में ६७० भजनों की रचना की गई है ! कुल- १२९१ भजन ग्रन्थ साहब में हैं।

श्री ग्रन्थ साहब में २५ रागों में भजनों को संग्रहित किया गया है! जैसे राग भैरव, राग रामकली, राग प्रभाती, राग आशा, राग भैरवी, राग टोड़ी, राग पीला, राग जिला, राग बसन्त, राग तिलंग राग पहाड़ी, राग कल्याण, राग जोग आदि।

श्री ग्रन्थ साहब में हिन्दी भाषा की पृष्ठ संख्या- १ से ५२४ एवं अंत में ७६१ से ७६५, ५२४+५ = ५२९ हैं, तथा सिन्धी देवनागरी लिपि भाषा की पृष्ठ संख्या ५२५ से ७६० कुल पृष्ठ २३६ हैं! इस प्रकार ५२९+२३६ = कुल- ७६५ है।

श्री ग्रन्थ साहब में १०८ सलोक माला, ५ धनाश्री छन्द, १६ शैर, ३ कुंडली आदि पद्य, छन्द, कवित्त दिए गये हैं।

श्री ग्रन्थ साहब में- ६० शान्ति के दोहे हैं! जिसके पाठ करने से मन को शांति मिलती है! पाठों के भोग साहब पर इसका सामूहिक पठन किया जाता है और पूर्णाहुति की जाती है।

श्री ग्रन्थ साहब में ब्रह्मदर्शनी के २५० पद हैं ! जिसमें १०-१० पद की पचीस दशपदीयां हैं ! $१० \times २५ = २५०$ पद ! किसी भी शुभ मंगलकार्यों के शुभारंभ में सामूहिक रूप से इस पाठ करना चाहिए।

श्री ग्रन्थ साहब में बारह मास छन्द हैं! चैत्र, वैसाख, जेष्ठ, आषाढ़, सावन, भादौ, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पोष, माघ, फागुन ! १२ महीने के बारह छन्द दिए गये हैं।

श्री ग्रन्थ साहब में सात दिवस छन्द भी हैं ! सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्रवार, शनिवार, रविवार ! सभी ७ दिवस पर ७ छन्द रचे गए हैं ।

श्री ग्रन्थ साहब में पैतीस अक्षरी छन्द अर्थात् “अ, इ, ऊ” फिर “क से ह” तक हर अक्षर पर कवित्त-छन्द लिखे गए हैं।

श्री ग्रन्थ साहब में आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक- १५२ कवितावली, १७ छन्दावली एवं १४१ कोटड़ा छन्द हैं।

श्री ग्रन्थ साहब में उलटबासी गूढ़वाणी (वेदान्त भाषा) दी गयी है! जिनमे भजन, छन्द, दोहे हैं !' जैसे :-

राग रामकली भजन:	३, २०
राग प्रभाती भजन	१०
राग आसा भजन	६८- ८०- ८१
राग भैरवी भजन	४२- ६४- ६५
राग जिला भजन	६- ७

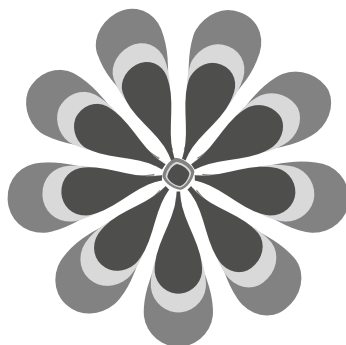
राग तिलंग भजन	३७
राग पूरब भजन	६
दोहावली	३०७- ३८८- ६५८- ६५६- ६६०
कवितावली- छन्दावली	१३२- १३३

आदि इनमे गूढार्थ अनुभवी वाणी है ! इसकी अलग से पुस्तक “उलटबासी” भी प्रकाशित है।

श्री ग्रन्थ साहब में १०० मुक्तिमणी प्रश्नोत्तरी दोहे एवं दोहावली के १२१२ मिश्रित उपदेश व यथार्थ वचन रूपी दोहें दिए गए हैं:- जिसमे गुरु प्रार्थना, गुरु व शिष्य लक्षण, मंत्र महिमा, रामनाम महिमा, भक्ति महिमा, संत व ज्ञान महिमा, सत्संग, प्रेम, मन, विद्या, सत्य वचन, कर्म व प्रारब्ध, भोजन विधि, बसंत महिमा आदि अनेक विषयों पर दोहे प्रकाशित है।

इस प्रकार श्री ग्रन्थ साहब में सभी वेदों का सार तत्व सोलह शिक्षाओं दिया गया हैं! जो गागर में सागर के समान हैं। अनमोल खजाना है।

‘महाराज श्री’ के ‘श्री चरणों’
हमारा कोटि- कोटि वन्दन...’





संकलन / संपादक
प्रेम प्रकाशी संत श्री मोनूराम जी
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर (राज.)
श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद (गुज.)